गहूंली संग्रहनामा ग्रंथ.

भाग पहेलो.

एमां जुदा जुदा कवियोनी रचेली प्रथम छापेली
गहूंली एकशो दश, तथा बीजी नवीन गहूं
लीयो चौद, सर्व मली एकशो चोवीश
गहूंलीयोनो संग्रह करी तेने
प्रथम करतां यथामति वधारे संशो
सम्यग् दृष्टि श्रद्धालु श्रावि
वांचवा तथा जणवाने

श्रीमुंबई मध्यें

श्रावक, खीमजी भीमसिं

निर्णयसागर छापखानामां छपावी ।

संवत् १९४८—सने १

॥ अथ ॥

॥ श्री माहावीर स्वामीना पांच वधावा प्रारंभ॥

॥ तत्र ॥

॥ वधावो पहेलो ॥

॥ हुंतो मोही रे नंदना लाल, मोरली तानें रे ॥ ए देशी॥
॥ वंदी जगजननी ब्रह्माणी, दाता अविचल वाणी रे ॥
कल्याणक प्रभुनां गुणखाणी, थुणशुं उलट आणी
॥ एहने सेवोने ॥ १ ॥ प्रभु शासननो सुलतान ॥ एह
ने सेवोने ॥ जस इंद्र करे बहु मान ॥ एहने सेवोने ॥
एतो भवोदधितरण सुखाण ॥ एहने सेवोने ॥ २ ॥
कीधुं त्रीजे भव वरथानक, अरिहा गोत्र निकाच्युं
रे ॥ ते अनुसरवा वरवा केवल, करवा तीरथ जाचुं
॥ एहने० ॥ ३ ॥ कल्याणक पहेले जगवल्लभ, त्रण
ज्ञानी माहाराय रे ॥ दशमा स्वर्ग विमानथी प्रभुजी,
भोगवी सुरनुं आय ॥ एहने० ॥ ४ ॥ जंबु द्वीपें भरत
क्षेत्रमां, क्षत्रिकुंभ सुखकार रे ॥ श्रीसिद्धारथ त्रिशला
उदरें, लेवे प्रभु अवतार ॥ एहने० ॥ ५ ॥ चउद
सुपन देखे तब त्रिशला, गज वृषभादि उदार रे ॥ ह
रखी जागी चिंते मनमां, माने धन्य अवतार ॥ एहने०

॥६॥ बहु उछरंगें जइ पियुसंगें, सघली वात सुणावें
रे ॥ सुनगे लाज पुत्रनो होशे, पियुनां वचन वधावे
॥ एहने० ॥ ७ ॥ स्वपनाफल पूछी पाठकने, गर्ने
वहे नृपराणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधावो,
गावे सुर इंद्राणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ वधावो बीजो ॥

॥ श्रावण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

बीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥
जन्म्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाउं तेहनी बलि
हारी ॥ बीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ छप्पन दिशि
कुमरी तिहां आवे, पूजी शुचिजलशुं न्हवरावे ॥ जीवो
महीधर लगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रिशलाना
जाया ॥ बी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रजुनुं वदन निहाली,
चाली चोंपें चतुरा बाली ॥ हरख्यो सुरपति सोहम
स्वामी, जाणी जन्म्या जगविश्रामी ॥ बी० ॥ ३ ॥
घोषा घंटा तव वजडावे, ततक्षण देव सहू तिहां
आवे ॥ प्रजु ग्रही कंचनगिरि पर ठावे, स्नान करी
जिननें न्हवरावे ॥ बी० ॥ ४ ॥ एक कोड़ वली ऊपर
जाणो, शाठ लाख संख्या परमाणो ॥ सहु कलशा शुचि
जलशुं नरिया, ततक्षण सोहम संशय धरिया ॥ बी०

॥ ५ ॥ चिंते लघुवय छे प्रभु वीर, केम सहेशे जल धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करवा चित्रित अतिशय नाणी ॥ वी० ॥ ६ ॥ माहावीर निज अंगुठे चंप्यो, ततक्षण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं नृत्य करे छे रसियो, प्रभुपद फरसें थइ उल्लसियो ॥वी०॥७॥ जाण्युं इंद्रें सहु विरतंत, बोले कर जोडी भगवंत ॥ गुनहो सेवकनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत एहनुं होजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने समर्पे, छवि पहोता नंदीश्वर द्वीपें ॥ पूरण लाहो रे लेवा, अठाइमहोत्सव तिहां करेवा ॥ वी० ॥ ए ॥ पुत्रवधाई निसुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥ निज परिकर संतोषी वारू, वर्द्धमान नाम ठवे उदारु ॥वी०॥ १०॥ अनुक्रमें जोबन वय जव थावे, नृपति राजपुत्री परणावे ॥ भोगवी प्रभु संसारिक भोग, दीप कहे मन प्रगटयो जोग ॥ वी० ॥ ११ ॥ इति॥

॥ वधावो त्रीजो ॥

॥ भवि तुमें वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कल्याणक त्रीजुं बोलुं, जगगुरु दीक्षा केरुं ॥ हर्षित चित्तें भावें गावे, तेहनुं भाग्य भलेरुं ॥ सहि तुमें सेवो रे, कल्याणक उपकारी॥ संयम मेवो रे, आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवय
णें, प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूझ बूझ जगनायक लायक,
एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड नें
आठ लाखनुं, दिनप्रत्यें दीये दान ॥ इणिपरें संव
त्सर लगें लईने, दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥
नंदिवर्द्धननी अनुमति लेइने, वीर थया उजमाल ॥
प्रभुदीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल
॥ स० ॥ ४ ॥ थापी दिशि पूरवनी साहामा, दी
क्षामहोत्सव कीधो ॥ पालखीयें पधरावी प्रभुनें, ला
भ अनंतो लीधो ॥स०॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने स
मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखा
मण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह
मल्लनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल
कमला वहेली वरजो, देंजो सुकृत दान ॥स०॥७॥
एम शिखामण सुणते सुणते, थुणते बहु नर नारी॥
पंच मुष्टिनो लोच करीने, आप थया व्रतधारी ॥
॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन, धन्य
त्रिशलाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदीवर्द्धन बंधव, एम
बोले सुरराया ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति लेई निज
बंधवनी, विचरे जगदाधार ॥ समितियें समिता गुप्तियें

गुप्ता, जीवदयाचंभार ॥ स० ॥ १० ॥ सिंह समो
वड दुर्द्धर थईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगजय
वंतो शासननायक, इणिपरें दीक्षा पाले ॥ स० ॥
॥ ११ ॥ दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमें दिलमां
लावो ॥ एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु
गावो ॥ स० ॥ १२ ॥ इति त्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी
जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुं हुं अवसर पामी
जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर ना
मी ॥ सांभल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमी
ने दिवसें, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ बार जोयण एक
रातें चाल्या, जाणी लाभ निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अ
पापा नयरीयें आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥
गणधरनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥
॥ सां० ॥ ३ ॥ भुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी
हरि समुदाय जी ॥ वीश बत्रीश दश दोय मलीनें, ए
चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना
करि सारी, त्रिदशपति अति भारी जी ॥ मध्य पीठ

ऊपर हितकारी, वेग जग उपकारी ॥सां०॥५॥ गुण पांत्रीश सहित प्रभुवाणी, निसुणे छे सहु प्राणी जी ॥ लोकालोक प्रकाशक वाणी, वरसे छे गुणखाणी ॥ ॥सां०॥ ६ ॥ मालकोश धुनराग समाजें, जलधरनी परें गाजे जी ॥ आतपत्र प्रभु शिरपर राजे, भामं मल छबि छाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे गढनी, प्रभुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमला नी शोभा, निरखे सुर नर भूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंद्र भूति आदें सहु मलीनें, जगन करे भूदेव जी ॥ विद्या वेदतणा अभ्यासी, अभिमानी अहमेव ॥सां० ॥ ए ॥ ज्ञानी आव्या निसुणी कानें, मनमें गर्व धरंत जी ॥ आव्यो त्रिगडे वाद करेवा, दीठो जग जयवंत ॥ सां० ॥ १० ॥ ततक्षण नामादिक बोला वे, तुल्य सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवा री, थाप्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदि पामी प्रभु शिर नामी, द्वादशांगी सुविचारी जी ॥ पद छ लाख छत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥ सां० ॥ १२ ॥ चालो तो जोवाने जइयें, वंदीजें जग वीर जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गौतम स्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रभुजीनी

मुद्दा, नरजव सफलो कीजें जी ॥ प्रजुजीनुं बहु मा
न करीने, लाज अनंतो लीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥
वारें वारें कहुं बुं तो पण, तुं तो मनमां नाणे जी ॥
महारा मनमां होंश अढे ते, केवल ज्ञानी जाणे ॥
॥ सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उजमाली,
चाली सघली बाली जी ॥ निसुणी दश आशातना
टाली, प्रजुवाणी लटकाली ॥ सां० ॥ १६ ॥ इणीपरें
त्रीश वरश केवलथी, बहु नर नारी तारी जी ॥ इम
वधावो चोथो सुंदर, दीप कहे सुखकारी ॥ सां० ॥ १७ ॥

॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ कल्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वा
ला ॥ जगवल्लन प्रजुना गुण गाई, सफल करो अव
तार वाला ॥ शासननायक तीरथ वंदो ॥ १ ॥ ए आं
कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता जगना
था वाला ॥ मध्य अपापा नगरी पधास्या, प्रणमे प
ग महिराण वाला ॥ शा० ॥ २ ॥ प्रजुयें लाजाला
न विचारी, अणपूब्यो उपदेश वाला ॥ शोल पहोर
लगें अमृतवाणी, वरस्या जवि उपदेश वाला ॥
शा० ॥ ३ ॥ दीवालीदिने मुक्ति पधास्या, पाम्या पर

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी, अक्षय सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कर्त्ता अकर्त्ता भोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ दर्शन ज्ञान चरण नें वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वाला ॥ शा० ॥ ५ ॥ छे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेह्ना गुण छे अनंत वाला ॥ एतो एक प्रदेशें साहिब, अनंत गुणें भगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभु ध्येय ने सेवक ध्याता, एह्मां ध्यान मिलाय वाला ॥ त्रिक जोगें पूरणता प्रगटे, सेवक ए सम थाय वाला ॥ शा० ॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोक्षवधावो, ध्यावो वीर जिणंद वाला ॥ शुभलेश्यायें जग गुरु ध्यानें, टालो भवभय फंद वाला ॥ शा० ॥ ८ ॥ इम प्रभु वीरतणां कल्याणक, पांच भवोदधि नाव वाला ॥ श्रीविजयलक्ष्मी सूरीश्वर राजें, में गाया शुभ भाव वाला ॥ शा० ॥ ए ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी कपूरचंद विश्राम वाला ॥ तस आग्रहथी हर्षित चित्तें, खंभात नयर सुठाम वाला ॥ शा० ॥ १० पंडित श्रीगुरु प्रेमपसायें, गाया तीरथराज वाला दीपविजय कहे मुजने होजो, तीरथफल माहाराज वाला ॥ शा० ॥ ११ ॥ इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गहूंलियो लखी छे ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंवर पागले पग दश्ने चडिया ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंली रंग रसाली, जिनशासनमांहे नित्य रे
दीवाली ॥ रूडी राजगृही अति शोहे, ते देखी त्रिभु
वन मन मोहे ॥ १ ॥ तिहां तो वीर आव्या रे चो
मासें, राजा श्रेणिक वंदे उल्लासें ॥ तस अजय कुंव
प्रधान, मंत्री बहु बुद्धिनिधान ॥ २ ॥ राजा श्रेणि
नी घर नार, शिरोमणि चेलणा सार ॥ बार व्र
नी साडीज पहेरी, नव वाडनी घाटडी घहेरी ॥ ३ ॥
हेरयां जिनगुणनूषण अंगें, गुरुगुण गावे मन रंगें ॥
भकित कचोलुं रे नरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोलि
॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, छवणी उपरें
रो रे जतन ॥ मन निर्मल मोती वधावे, ते तो शि
मणीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य,
नणशे जिनगुण जगीश ॥ तस घर होय कोडी
आण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ श्री गहूंली बीजी ॥

वालो माहारो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ एदेशी ॥

॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शणगार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरि हैडे हर्ष अपार रे ॥ १ ॥ एतो मुक्ताफल मूठी नरी, रचे गहूंली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, घन वरसे अखंमित धार रे ॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत कनक रत्नना, सुररचित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्य मणिसिंहासनें, शोनित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जिहां नरपति खगपति लसपति, सुरपति युत पर्षदा बार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमा गणधार रे ॥ ४ ॥ जिहां जीवादिक नव तत्त्वना, द्रव्यनेद विस्तार रे ॥ एतो श्रवण सुणि निर्मं करे, निज बोध बीज सुखकार रे ॥ ५ ॥ जिहां त्र छत्र त्रिनुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे सखि चिदानंदकी बंदना, तस होजो वारंवार रे ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री गहूंली त्रीजी ॥

घरे आवोजी आंबो मोरीगो ॥ ए देशी ॥

॥ माहावीरजी आवी समोसस्या, राजगृही नयरी उन ॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां बेग श्रीवर्द्धमान माहा० ॥ १ ॥ वनपालकें आपी वधामणी, हरख श्रेणिक नूपाल ॥ गौतम आदि गणधरु, साधवी

त्रीश हजार ॥ माहा० ॥ २ ॥ राजा गज शणगास्या मलपता, तूर्य तणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्री यें संचस्यो, साथें मंत्री अजयकुमार ॥ माहा०॥ ३ ॥ ढोल ददामा गडगडे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय गजथकी हेठा ऊतस्या, आवी वांदे प्रभुजीना पाय ॥ माहा० ॥ ४ ॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, आवी बेठा सजा मोऊार॥ राणी चेलणा लावे गहूंअली, साथें सखियोनो परिवार ॥ माहा० ॥ ५ ॥ राणियें घाट उढ्यो रे घूटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ राणीयें कुंकुम घोल्यां कुंकावटी, राणियें लीधुं श्रीफल श्रीकार ॥ महा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूंअली, माहावीरना पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारें परवरी, राणी गावे गीत रसाल ॥ माहा० ॥ ७ ॥ राणी लली लली लीये रे लूंछणां, राणी पूजे प्रभुजीना पाय ॥ माहावीरनी देशना सांजली, समकित पाम्यो नरराय ॥ माहा० ॥ ८ ॥ प्रजु तुम सरीखा गुरु मुऊ मल्या, मद्दारी डुर्गति दूर पलाय ॥ प्रजु सेवक जाणी तारजो,मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥माहा०॥ए

॥ अथ श्री जीवाजिगम सूत्रनी गहूंली चोथी ॥

॥ नवि तुमे वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणीयें रे जीवाभिगमनी वाणी, मीठी ला गे रे मुजने वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ सूत्रतणी रचना गणधरनी, अर्थ ते वीरें भांख्या ॥ गौतम पू छे बे कर जोडी, आतमहित करी दाख्या ॥ स० ॥ मी० ॥ १ ॥ जीव अजीव तणी जे रचना, पूछी गौतमस्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे वातो, भां खे अंतरजामी ॥ स० ॥ मी० ॥ २ ॥ साते नरक तणां दुःख भांख्यां, आतमहित करी शीख्या ॥ जे जे प्रश्न पूछे गोयम, ते ते प्रजुजीयें भांख्या ॥ स० ॥ मी० ॥ ३ ॥ पांच अनुत्तर तणी जे रचना, विविध प्रकारें भांखी ॥ जविक जीवने सुणवा कारण, श्री जिन आगम साखी ॥ स० ॥ मी० ॥४॥ मीठी वा णीयें गहूंली गावे, वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक पूरे जाव धरीने, अक्षतें करीने वधावे ॥ स० ॥ मी० ॥ ॥ ५ ॥ नौतनपुरमां रंगें गाई, गहूंली चढते उमंगें ॥ कहे मुक्ति जिनराजनी वाणी, सुणजो अति उछरंगें ॥ स० ॥ मी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री जगवतीसूत्रनी गहूंली पांचमी ॥

॥ जवि तुमें वंदो रे, सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणियें रे, जगवतीसूत्रनी वाणी ॥ पात

क हणीयें रे, आतमने हित आणी ॥ ए आंकणी ॥
समकितवंत तणी ए करणी, जवसागर उद्धरणी ॥
नरकनिगोद तणी गति हरणी, मोक्षतणी नीसरणी
॥ स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विवाहपन्नत्ती, बीजुं ज
गवती नाम ॥ शतक एकतालीश बहु उद्देशें, अनंता
नंत गुणधाम ॥ स० ॥ २ ॥ वीर जगत गुरु गौ
तम गणधर, जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न बत्रीश हजा
र प्रकाश्या, वाणीनी बलिहारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंग
मुनि सिंहामुनिवरना, प्रश्न सरस ठे जेहमां ॥ जाव जे
द षड्द्रव्य प्रकाश्यां, अमृतरस ठे एहमां ॥ स० ॥ ४ ॥
संग्राम सोनी प्रमुख जे जावी, समकितवंत प्रसि
द्धो ॥ प्रश्नें कंचन मोर ठवीने, नरजव लाहो लीधो
॥ स० ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञान
जक्ति गुरु सेवा ॥ जगवती अंग सुणो बहु जावें,
चाखो अमृत मेवा ॥ स० ॥ ६ ॥ वीरक्षेत्रना सकल
संघने, विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहे जगवती
सुणतां, मंगल कोटि वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गहूंली ठठी ॥

॥ चालोने बाई चालोने जुउ, सोहम गणधर रच
ना रे ॥ चालोने बाई चालोने० ॥ ए आंकणी ॥

राजगृही नगरी सोहामणी, तस वनमां सोहम आव्या रे ॥ राजा कोणिक वंदन आवे, जाव धरीने वधावे रे ॥ चा० ॥ १ ॥ चतुरंगिणी सेना लेई आवे, आनंद मंगल पावे रे ॥ बहु युक्तें करी सोहम वांदे, राजा मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि तपसी केइ व्रतधारी, केइ संजमना रसिया रे ॥ केइ मुनि जिन आणाने धारे, वारे विषय कषाया रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकें सहु मुनिने वांदे, जव जल पार उतरवा रे ॥ रजत रकेबी हाथ धरीनें, सोहमस्वामी वधावे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चिहुं गति वारक साथीयो पूरे, मोतीथालें वधावे रे ॥ पद्मावती राणी मनरंगें, शोल सज्या शणगार रे ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ बहु सखीने परिवारें राणी, मनमां उलट आणी रे ॥ कोणिक राजा देशना निसुणे, वाणी अमृत सरखी रे ॥चा०॥६॥ जाव धरीने राजा राणी, अभिनव निसुणी वाणी रे ॥ जलधर वाणी निसुणी राजा, वाज्यां सुजशनां वाजां रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ भुजपुर मंमण चिंताचूरण, श्रीचिंतामणि स्वामी रे ॥ चिहुंगति चूरण गहूंली गाई, संघने सदा वधाई रे ॥ चा० ॥ ८ ॥ जे गहूंली गाशे मनरंगें, तस घर

नित्य उछरंग रे ॥ श्रीजिनआणा पाले अहोनिश, मु
क्तिपद पामे विशेष रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री गहूंली सातमी ॥

॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ सखी सरस्वती नगवती माता रे, कांइ प्रणमीजें
सुख शाता रे, कांइ वचन सुधारस दाता गुणवंता
सांनलो वीर वाणी रे, कांइ मोक्ष तणी निशाणी ॥ गु०
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोवीशमा जिन राया
रे, साथें चौद सहस मुनिराया रे, जेहना सेवे सुर
नर पाया ॥ गु०॥ कां०॥ २ ॥ सखी चतुरंग फोजा
साथ रे, सखि आव्या श्रेणिक नर नाथ रे, प्रनु
वंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥ कां० ॥ ३ ॥ बहु सखि
संयुत राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे, एतो
नामंमलमां उजाणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ४ ॥ करे सा
थीयो मोहन वेल रे, कांइ प्रनुने वधावे रंग रेल रे,
कांइ धोवा कर्मना मेल ॥ गु० ॥ कां० ॥ ५ ॥ बारे
पर्षदा निसुणे वाणी रे, कांइ अमृतरस सम जाणी रे,
कांइ वरवा मुक्ति पटराणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री गहूंली आठमी ॥

॥ आ जो रे बाइ आ जो रे, सोनागी गुरुनां पगलां

रे ॥ पगले पगले रत्न जडावूं, झगले झगले हीरा रे ॥ ए देशी ॥ चालो रे बाइ चालो रे जूउ, गौतम स्वामीनी रचना रे ॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता संजम जतना रे ॥ चा० ॥ १ ॥ छट्ठे वरसें दीक्षा लीधी, ते पण मुनि छे सार्थे रे ॥ जिनआणाथी संजम पाले, करवा शिव वधू हाथें रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि गणधर पद सेवे छे, केइ मुनि ध्यान धरे छे रे ॥ केइ मुनि आगम दान दिये छे, केइ मुनि विनय करे छे रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केइ मुनि चउ अनुजोग जणे छे, केइ मुनि जोग वहे छे रे ॥ केइ मुनि पूर्व सूत्र जणे छे, केइ मुनि अर्थ ग्रहे छे रे ॥ चा० ॥४॥ केइ मुनि मास खमण तप धारी, केइ मुनि तपिया कहीयें रे ॥ केइ मुनि विगय तणा परिहारी, केइ मुनि आतम ध्याय रे ॥ चा० ॥५॥ केइ आचारांग सूयगडांग ठा णांग, केइ समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमु ख बहु आगम, जणी आतमरस पोखे रे ॥ चा० ॥ ॥ ६ ॥ सहु सहिअर गुणशीला वनमां, आवी गण धर वांदे रे ॥ अमृतथी पण अधिकी वाणी, निसु णी मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पट्टोधर आगल

गहूंली पूरी, मुक्ताफलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य माता पृथ्वी जेणियें, गौतम गणधर जाया रे ॥ चा० ॥ ॥ ७॥ प्रभु वाणी निज चित्त समरती, परषद निज घर आवे रे ॥ दीपविजय कहे गौतम नामें, माहा मंगल पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ७॥

॥ अथ गहूंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आव्या सोहम गणधा र ॥ नमो गुरु नावशुं ए ॥ हर्षपूरित नगरीजना ए, वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक राय तव पूछतो ए, आज किश्यो उत्सव थाय ॥ ॥ नमो० ॥ इंड उत्सव के कौमुदी ए, एवडां लोक किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आ विया ए, के तिहां जाये सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह क हे प्रभु सांभलो ए, हर्ष करीने मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥ तव कोणिकें वात सांभली ए, उल्लसी साते धात ॥ ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्ज कर्या ए, करी वलि निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रत्नें ज डया ए, हइए हार सोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज ए क चंड्मा ए, ए दोय कुंमल झलकंत ॥ न० ॥ ५ ॥

चतुरंगी सेनायें परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग धस्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां अछे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच अभिगम साचवी ए, भक्तियें हर्ष भराय ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति दुःखवारण हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उछाले अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए, भवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्वतुं ए, जे वांदे गुरु भले भाव ॥ न० ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली दशमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥ ॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां समोसस्या आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ समवसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठा त्रिभुवननाथ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥ गजसरखी जस चाल ॥ सु० ॥ दीर्घभुजा तनु दीपती ॥ जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु० ॥ २ ॥ नरना अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें थुणियां चरणसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोभायें लाजियो ॥ जि० ॥

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें वारिया ॥ जि० ॥ नाव रिपु जे आठ ॥ सु०॥ मुनिने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो ठाठ ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर नगवंत जी ॥ जि० ॥ चो त्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें क री ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन पालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्या न ॥ सु० ॥ सांनली नरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे बहुलां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना लेइने ॥ जि० ॥ वांद्या श्रीनगवान ॥ सु० ॥ प्रनुजीनी वा णी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री नरत सुजाण ॥ सु० ॥७॥ वखाण अवसर साथियो ॥ जि० ॥ लावे नरतनी ना र ॥ सु० ॥ अक्षास्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥ गाये गो री गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आग लें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥ दर्शन सागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण ॥ सु० ॥ ए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ स

ह्यिर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण गुणी जाव अजेद ॥१॥ सह्यिर मोरी हे ॥ गहूंली करो गुरु आगले ॥ए टेक॥ पर परिणामने टालवा, लेवा शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ २ ॥ ड्व्य जाव संजोगथी, जे रहे नित्य अलेप ॥ स० ॥ स्याद्वादनी दीये देशना, जाणंग नय निक्षेप ॥ स० ॥ ग० ॥ ३ ॥ आत्मजाव स्वरूपना, जासन जानु समान ॥ स० ॥ स्वपर विवेचन श्रुतथकी, तेणे जक्ति बहुमान ॥ ॥ स० ॥ ग० ॥ ४ ॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा श्रुतनी बहु जक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी, फोरवती आत्मशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आत्म बाजोठ उपरें, समकित साथियो पूर ॥ स० ॥ लली लली करती जूंबणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥ ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल होय तास ॥ स० ॥ माहरे नवो नव नित्य होजो, ज्ञानमहोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति॥ ११॥

॥ अथ गहूंली बारमी ॥

॥ जीरें मारे देशना द्यो गुरुराज, उलट आणि अति घणो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आवियो हर्ष उल्लास, पूठ देई संसारने ॥जी०॥१॥जीरे०॥ विलंब न कीजें गुरुरा

ज, दास उपर दया करो ॥जी०॥जीरे०॥ महेर करो मे हेरबान, अमृतवचनें सींचियें ॥ जी० ॥ २ ॥ जीरे०॥ सुणवा सूत्र सिद्धांत, हेजें हियडुं गहगहे ॥ जी० ॥ जीरे०॥ जिम मोरा मन मेह, सीताने मनें रामजी ॥ जी० ॥३॥जीरे०॥ कमला मन गोविंद, पारवती ईश्वर जपे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ तिम मुक हृदय मकार जिनवाणी रूचे घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे०॥ नयगम नंग निक्षेप, सुणता समकित संपजे ॥ जी० ॥ जीरे०॥ उत्पाद व्यय ध्रुव रूप, स्याद्वाद रचना घणी ॥जी०॥५॥ जीरे०॥ नवतत्त्व ने षट् द्रव्य, चार निक्षेप सप्तनयें करी ॥ जी० ॥जीरे०॥ निश्चय ने व्यवहार, इणिपरें मुक उलखावियें ॥जी०॥ ६ ॥जीरे०॥ कृपा करो गुरुराज, ते सुणवा इछा घणी ॥ जी० ॥जीरे०॥ निज परसत्ता रूप, नासे ते सुणतां थकां ॥ जी० ॥ ॥७॥जीरे०॥ जिन उत्तम माहाराज, तस पदपद्म सेवे सदा ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ प्रगटेआत्मस्वरूप, अनय अर एणी परें नणे ॥ जीरे जी ॥ ८ ॥ इति ॥१२॥

॥ अथ गहूंली तेरमी ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥ नयरी राजगृही सार, लोक वसे रे अपार ॥ आठे लाल ॥ जंबुस्वामी समोसर्या

रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नर ने नार ॥ ॥ आ० ॥ देशना पुष्कर जलधरें रे ॥ २ ॥ इंद्रिय ऊीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ आ० ॥ गुरुमुख देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिनमतकज दिनकार, सोहम स्वामी पट्टधार ॥ आ० ॥ चरणकरण जंमार छे रे ॥ ४ ॥ सोजागी शिरदार, सुविहित मुनि आ धार ॥ आ० ॥ पृथिवी पीठें विचरता रे ॥ ५ ॥ अ प्रतिबंध विहार, समरस गुण सुखकार ॥ आ० ॥ वै राग्यें जनतानें रीऊवे रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश, दे बहुला उपदेश ॥ आ० ॥ बूऊवे जाण अजाणने रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप घरनार, स्वस्तिक पूरे उदार ॥ आ० ॥ ज्ञानजी नक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुत नक्ति करे जेह, सुख विलसे नर तेह ॥ आ० ॥ दर्शी नसागर इम वदे रे ॥ ए ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ गहूंली चौदमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ॥ ए देशी ॥ ॥ राजगृही नगरी सोहामणी ॥ गुरु आवे छे ॥ श्री सोहम गणधार ॥ सुगुरु वधावे छे ॥ पंचसया मुनि साथ छे ॥ गु० ॥ आतम सुखना करनार ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ गुणशील नामें उद्यानमां ॥ गु० ॥ उतर्या

ए वनमांय ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ वीनव्या ॥ ॥ गु० ॥ते सांजली कोणिक राय ॥ सु० ॥ २ ॥ चतुरंगी सेना सज्ज करी ॥ गु० ॥ गज रथ पायक नहिं पार ॥ सु० ॥ घणे आमंबरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे थइ उजमाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रने तारवा ॥ गु० ॥ वार वार जवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शणगार सजी करी ॥ गु० ॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगशुं ॥ ॥ गु० ॥ अक्षत पूरे सार ॥ सु० ॥ जली जली ले बे उवारणां ॥ गु० ॥ प्रदक्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वारक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥ कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पूरजो कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व नकीजें रे, ए सद्गुरु शीखडली ॥ ए देशी ॥ ॥ सरसती चरण नमी करी केशुं, गायशुं आगम वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंतजीयें प्रकाश्यो, सूत्र ते गणधर वाणी ॥ जवि तुमें सुणजो रे, सोहम गणधर वाणी ॥ मीठी लागे रे, मुजनें वीरनी वाणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चतुरा चालो गुरुनी पासें, गहूंली करीयें

मन रंगें ॥ नवशत अंग धरी शणगार,प्रभुगुण गाउ उ मंगे ॥ भ०॥ २ ॥ हाथे रजत रकेबी धरीने,मांहे छीप ना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु गुण मधुरा गावो ॥ भ० ॥३ ॥ राजगृही नयरें गुणशी लचैत्यें, तिहां प्रभु वीरजी आव्या ॥ भंभासार ते सां भली हरख्यो, चतुरंग सेनथी आव्या ॥ भ० ॥४॥ चौद हजार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस छत्रीश ॥ इं इभूति आदें देइ गणधर, प्रभुपरिवार जगीश ॥ ॥ भ० ॥ ५ ॥ प्रभु आदि सरवेनें वांदी, मगधाधीश भूपाल ॥ चेलणा राणी करे ते गहूंली, प्रभुसन्मुख ततकाल ॥ भ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली साथीयो पूरे, अष्ट कर्मने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण दुःख निवारण, मनोवंछित सवि पूरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्रीअचलगछप ति पूज्य पट्टोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि छ त्रीश गुणें करि शोहे, भवि प्रणमो तस पाया ॥ भ० ॥ ८ ॥ जखौ बंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना छे रा गी ॥ श्रीवीर प्रभुनो पसाय लहीनें, गातां शुभमति जागी ॥ भ० ॥ ए ॥ आषाढ वदि एकमनें दिवसें, गहूंली गाई मनरंगें ॥ चतुरा मलि सुकंठें गाजो, भाव धरी उमंगें ॥ भ० ॥ १० ॥ जे सोहागण मली

गहूंली गाशे, एम कहे केवल नाणी ॥ सर्वार्थ सिद्ध तणां सुख विलसे, लेशे मुक्ति पट्टराणी ॥ न० ॥ ११ ॥ १५

॥ अथ गहूंली शोलमी ॥

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरु ॥ जीरे अविचल शासन वीर रे ॥ गुणवंता गिरुआ वाणी मीठी रें माहावीरतणी ॥ जीरे पर्षदा बार मली तिहां, जीरे अरथ प्रकाशो गुणगंजीर रे ॥ गुणवंता गौतम, प्रश्न पूछे रे माहावीर आगळें ॥ १ ॥ जीरे निगोद स्वरूप मुजने कहो, केम ए जीवविचार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे मधुर ध्वनियें जगगुरु कहे, जीरे करवा नविक उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥ जीरे राजचउद लोक जाणियें, जीरे असंख्याता जोजन कोडाकोडी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे जोजन एक एमां लीजीयें, जीरे लीजियें एक एकनो अंश रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोदें जीव अनंत छे, जीरे पुजल परमाणुआ अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एकप्रदेशें जाणीयें, जीरे प्रदेशें वर्गणा अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ जीरे एक असंख्य गोलासंख्य छे, जीरे निगोद असंख्य गोला शेष रे ॥ गु० ॥ वां० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्यें गुण अनंत छे,

जीरे वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीरे लोक सकलमय इम लह्यो, जीरे कहे गौतम धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने आगल गहूंअली, जीरे फतेशिखर अमृतशिव निश्रे णी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥ राग धोल ॥ बेनी संचरतां रे संसारमां रे, बेनी सद्गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंअली रे ॥ बेनी सद्दहणा जिनशासननी रे,बेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी सम संतोष साडी बनी रे, बेनी नवब्रह्म नवरंग घाट ॥ व० ॥ बेनी तप जप चोखा कजला रे, बेनी सत्यव्रत विनय सुपाट ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी समकित सोवनथालमां रे, बेनी कनक कचोले चंग ॥व०॥ बेनी संवर करो शुज साथीयो रे, बेनी आणा तिलक अजंग ॥व०॥ ३ ॥ बेनी समिति गुप्तिश्रीफल धरो रे, बेनी अनुजव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ बेनी नवतत्त्व हृदये धरो रे, बेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥ ४ ॥ बेनी जवजल जेहमां जेदीयें रे, बेनी विवेक वधावो शाल ॥ व० ॥ बेनी वीर कहे जिन शासने रे, बेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ गहूंली अढारमी ॥

॥ वाह्मलोजी वाये बे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहमस्वामी समोसस्या रे, राजगृही उद्यान ॥ बहु मुनि परिकर संजुता रे, चउनाणी जगवान ॥सोह०॥ ए आंकणी ॥१॥ गुरुमुख कमल विलोकवा रे, आवे श्रेणिक माहाराय ॥ नाव नक्ति करी वांदिया रे, गणधर केरा पाय ॥ सो० ॥ २ ॥ श्रीगुरुजी दीये देशना रे, ते सांजले श्रोतावृंद ॥ अमीय समाणी वाणी सुणी रे, मनमां पामे आनंद ॥ सो० ॥ ३ ॥ वखाण अवसर जाणीने रे, ज्ञाननी नक्ति निमित्त ॥ सतीय शिरोमणि चेलणा रे, साथीयो पूरे पवित्त ॥ ॥ सो० ॥ ४ ॥ ज्ञान परम गुणजीवने रे, जे तस नक्ति करेय ॥ तेहने ज्ञाननी संपदा रे, दर्शन एम कहेय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणीशमी ॥

॥ राजगृही समोसस्या ॥ गुरुराज रे ॥ सोहम स्वामीआज ॥ समारो काज रे ॥ सहीयर मोरी वांदवा ॥ गु० ॥ आवो लेई वर लाज ॥ स० ॥ १ ॥ गुरुआगल रचो गहूंअली ॥ गु० ॥ डुविधनाव बहु नावि ॥ स० ॥ अध्यातम वर थालमां ॥ गु० ॥ गु

रुगुण मोती जावि ॥ स० ॥ २ ॥ गुणि मन सोवन फूलडां ॥ गु० ॥ शुज रति कुंकुम घोल ॥ स० ॥ श्र द्धा रकेबी कर ग्रही ॥ गु० ॥ दर्शन नूमि अमोल ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुजव श्रीफल रूअडुं ॥ गु० ॥ उ त्तरगुण बहु शाल ॥ स० ॥ पंचाचार करो लूंबणां ॥ ॥ गु० ॥ तिलक विवेक विशाल ॥ स० ॥ ४ ॥ इणि परें इव्यनें जावथी ॥ गु० ॥ मंगल आठ कराय ॥ स० ॥ राणी कोणिक रायनी ॥गु०॥ गहूंली गुरु गुण गाय ॥ स० ॥ ५ ॥कंचनकमल विराजता ॥ गु० ॥ दिये देशना सार ॥ स० ॥ चरण करण रयणें ज स्या ॥ गु० ॥ प्रजु पंचम गणधार ॥ स० ॥ ६ ॥ पं च समिति समिता थका ॥ गु० ॥ नव कल्पी करय विहार ॥ स० ॥ चउविह संघें परिवस्या ॥ गु० ॥ जीत्या विषय विकार ॥ स० ॥ ७ ॥ जाव धरी नमुं तेहना ॥ गु० ॥ चरणयुगल अरविंद ॥ स० ॥ वीर वाणीसंजलावतां ॥गु०॥ मलुकजाव अमंद ॥स०॥८॥

॥ अथ गहूंली वीशमी ॥

॥ अने हांरे वालोजी वाये छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे वीरजी दीये छे देशना रे ॥ चालो चा लो सहीयरनो साथ ॥ सुरवर कोडा कोडि तिहां म

ल्या रे, प्रजु वरसे बे त्रिजुवन नाथ ॥ वीर० ॥ १ ॥
अने हांरे समवसरणनी शोजा शी कहुं रे, जिहां मु
निवर चौद हजार ॥ महासती चंदनबाला मावडी
रे, सहु साधवी बत्रीश हजार ॥ वीर० ॥ २ ॥ अने
हांरे गणधर पूज्य अग्यार बे रें, तेहमां गौतम स्वा
मी वजीर ॥ त्रणशें चउद पूर्वी दीपता रे, श्रुत
केवली जगवड वीर ॥ वीर०॥ ३ ॥ अने हांरे सातशें
केवली जगत प्रजाकरु रे, तेतो पाम्या बे जवतीर ॥
पांचशे विपुलमति परिवार बे रे, सहु परिकर बे प्र
जुवीर ॥ वीर० ॥ ४ ॥ अने हांरे आणंद श्रावक
समकित उच्चरे रे, वली द्वादश व्रत जयकार ॥ ए
क लाख उगणशाठ हजारमां रे, मुख्य श्रावक दृढ
व्रत धार ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अने हांरे सखी वयणे
उजमाली बालिका रे, आवी वंदे प्रजुजीना पाय ॥
माहामंगल प्रजुजीनी आगलें रे, पूरे चउ मंगल सु
खदाय ॥ वीर० ॥ ६ ॥ अने हांरे सातमुं अंग उ
पासक सूत्रमां रे, प्रजु दीपविजय कविराज ॥ आ
णंद सरिखा दश श्रावक कह्या रे, लेहशे एक जवें
शिवपुर राज ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ गहूंली एकवीशमी ॥

॥ गाम नगर पुर विचरंता, गुरु आवे छे, मुनि पंच सया परिवार ॥ साथें लावे छे ॥ सहस अढार सीलांगना, जे धोरी छे ॥ ब्रह्मचर्यना भेदअढार, आप विचारी छे ॥ १ ॥ जीवभेद बत्रीशनी, दया जाणी छे ॥ निरुपाधिक देशना सार, नाथ वखाणी छे ॥ दीक्षा दोष निवारवा, नर तारे छे ॥ पाप स्थानना दोष अढार, दूर निवारे छे ॥२॥ रत्नत्रयि आराधता, गुरु राजे छे ॥ गुरुराजगृही उद्यान, अधिक दिवाजे छे॥ कनककमल बीराजता, गुरु गाजे छे ॥ प्रभुवीर पट्टोधर धीर, भावठ भांजे छे ॥ ३ ॥ जंबु कुमरयुक्तें करी, गुरु भेट्या छे ॥ कहे मुखथी म्हारा आज, पातक मेटयां छे ॥ समुद्रसिरी जंबू तणी, पट्टराणी छे ॥ वलि बीजी साते नार, गुणना खाणी छे ॥४॥ पहेरी करुणा कांचली, मन मोती छे ॥ उढी समकित साडी मांहे, गुरुमुख जोता छे ॥ थिरता भावना थालमां, व्रत मोती छे ॥ भरी कुंकुमराग कचोल, पुण्यपनोती छे ॥५॥ श्रद्धाभाव नो साथियो, त्यां पूरे छे ॥ छवि पंचाचार रतन, चिहुं गतिचूरे छे ॥ ते देखी मोहरायनी, मात झुरे छे ॥ ए लेशे शिवसुखराज, चढते नूरे छे ॥ ६ ॥ गहूंली करो गुरु

आगलें, मन माचे छे ॥ हवे जंबु सोहम पास, संजम जाचे छे ॥ पांचशें सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं छे ॥ कहे मोहन माहाराज, कारज सीधुं छे ॥७॥ इति ॥२१॥

॥ अथ गहूंली बावीशमी ॥

॥ बेनी नरनव पुण्यें पामी रूअडा रे, शुचि रुचि करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोतीयें रे ॥ बेनी दर्शन करो आदि देवनुं रे, बेनी वली वली वांदो रे अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी मयगल परें मुनि मालता रे, बेनी मधुकर परें लीये आहार रे ॥व०॥ बेनी आतमराम रमे रंगशुं रे, बेनी सूत्र अर्थ नय नंमार रे ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी इम सोहागण पूरे साथियो रे, बेनी गाउ मंगल गीत रे ॥ व० ॥ बेनी विधिशुं वधावी करो लूंछणां रे, बेनी ए जिन शासन रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी पच्चरकाण करो पाय पूजीने रे, बेनी वीरवाणी पीयो रसाल रे ॥ व० ॥ बेनी शुद्ध होये आतमा आपणो रे, बेनी शिवसुख लहीयें रसाल रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥२२॥

॥ अथ गहूंली त्रेवीशमी ॥

॥ विमलगिरि रंगरसें सेवो ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया, वसी उन्मारगथी ख

सिया, शिववद्दू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वी
र्युं गुणगणुं बाल, जगवई अंगें सुविशाल, रहे
प्रमत्तें घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरत स्थिति
आवे, निडामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे जावें
॥ मु० ॥ ३ ॥ ड्व्यजाव संजम धरिया, जंगम तीरथ
संचरिया, पाखरिया सिंह केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥
डुविहासित सहे न लहे, कष्ण परिसह वीश
सहे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्र
वाल दशविध पाले, चरणकरण गुण अजुआले,
शून्यदहन अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ एहवा मुनि
वरनी आगें, चतुरा अक्षर फल मागे, श्राविका मुनि
गुणरागें ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती,
वधावती ऊजके मोती, लली लली गुरु सन्मुख जोती
॥ मु० ॥ ८ ॥ आगम रयण गुणें रमती, गुरुगुण गा
ती मन गमती, श्रीशुजवीर चरण नमती ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनो विवाहलो चोवीशमो ॥

॥ पासकुमर महिमा निलो, गुणमणि रयण जंमा
र ॥ अवसर विवाहजिन तणो, गायशुं अति सुखकार
॥ पा० ॥ १ ॥ शुज मंमपें तोरण सोहियें रे, जोतां
सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ महाजन मलीयो छे

अति मनोहार, राय राणानो नहिं पार ॥ पा० ॥
॥ २ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, वलि नील वरण सुखदाय ॥
दीसे छे अति रे दयामणी, पास कुमर देखी सुख थाय
॥ पा० ॥ ३ ॥ पासकुमर चड्या वरघोडे, शिर खूप
जड्या छे बहु मोडे ॥ मानुं रवि शशी आव्या छे दोड,
कानें कुंमल मस्तक जोड ॥ पा० ॥ ४ ॥ सजन
संतोष्या बहुपरें, तिहां अश्वसेन माहाराय ॥ शुन
शणगार सजि सुंदरी, पासकुमर सुखदाय ॥ पा०
॥ ५ देव उतारे आरती रे, वली नर नारी गुण
गाय ॥ सुवर्ण मुकुटें हीरा सोहीयें रे, तोरण आव्या
श्री जिनराय ॥ पा० ॥ ६ ॥ जिनमुखें सोहीयें तं
बोल रे, घणो दिसे छे फाक जमोल रे ॥ परण्यां पर
ण्यां प्रनावती राणी, रूपें अप्सरा ने इंद्राणी ॥
पा० ॥ ७ ॥ जिन परणीने निजघर आविया रे, जा
चकने दानशुं लाविया रे ॥ गुण गाये छे गंधर्व रंग,
देवे उदय उलट अंग ॥ पा० ॥ ८ ॥ इति ॥ २४ ॥
॥ अथ श्रीमाहावीरस्वामीना महिना पच्चीशमा ॥
॥ पद्मसरोवर हुं गई रे, त्रिशला राणी करे रे कल्लोल
॥ आजनो दिन रलीयामणो रे ॥ पहेलेने मासें अ
मीय पीयो रे, बीजे चंदन घोल ॥ आ० ॥ १ ॥ त्रीजे

ने मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥आ०॥ पांचमे इष्ट पूजी जिमो रे, छठे रह्या गर्भावास ॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहें चडे रे, आठमे दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतना करो रे, स वानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीयें पग देई जनमीया ए, जन्म्या श्रीमाहावीर ॥ आ० ॥ सोना छरीयें नाल वधेरीयां रे, दायीने कोटी सोनैया दीध ॥ माहावीर कुंवर जन्म्या रे ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ पुत्र जन्म निज सांभली रे, राय सिद्धार्थने हर्ष न माय ॥ मा० ॥ वधामणीयाने पंचांग पहेरामणी रे, वली कीधी लाख पसाय ॥ मा०॥ ५ ॥ पाणी साथें दूध डे नवरावीया रे, चोखा साथें मोतीडे वधाव ॥मा०॥ चीर फाडीनें बालोतियां रे, पलंग पालखडीयें पोढा व ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडियो उछले रे, नीलां तो रण बांध्यां छे बार ॥ मा० ॥ वछजीनी फईजी तेडा वीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरु शिखर ऊपर स्नात्र करे रे, छप्पन कुमरी गावे छे गीत॥ मा० ॥ नाम पडामण हाथीयो रे, दीधां दीधां रत्न बे चार ॥ मा० ॥ ८ ॥ सोना ते केरुं फुमणुं रे, मांहे मोतीना फुमकार ॥ मा० ॥ त्रिशला राणी पुत्र तुमा

रडो रे, देवतणो शिरदार ॥ मा० ॥ ए ॥ कागा गहुं नी लापशी रे, मांहे मालवीयो गोल ॥ मा० ॥ जा जे घीयें लसलसी लापशी रे, गोत्रज आगल नैवेद्य कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुंवरनी माता एम जणे रे; कुंवरजी अविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पालणी ये पोढाडीया रे, नीलुडां वस्त्र उंगाड ॥मा०॥ ११ ॥इति॥

॥ अथ गहूंली छवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिल धरी रे, वांदुं गुरुने उत्साह ॥ कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवान ॥ चमर ढलावो जिणंद प्रजु वीरने रे॥ ए आंकणी ॥ १॥ कंकण नेउर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग जगति चालशुं चालती रे, मलपती सहियर साथ ॥ च० ॥ २ ॥ कनक कचोलां कुंकुम जरी रे, थाल मुक्ताफल सार ॥ चरम प्रजुजीनें वांदवा रे, शोल स जी शणगार ॥ च०॥ ३ ॥ प्रह उगमताने गहूंअली रे, वाजे वीणा सार ॥ चेलणा काढे छे गहूंअली रे, श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूर्यो छे साथियो रे, छवीयां पांच रतन्न ॥ चेलणा वधावे छे मोतियें रे, देशना दिये जगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट पीठ प्रजु पाउले रे, गाती रंगें रे साज॥ सोवन सूर

ज ऊगियो रे, सुरतरु मोह्यो रे आज ॥ च० ॥ ६ ॥ पूर्वज तूग पुण्यथी रे, वांद्या वीर जिणंद ॥ सुणी देशना नगवंतनी रे, हरख्यां नर नारी वृंद ॥ च० ॥ ७ ॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संनारे दिवस ने रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लक्ष्मीसूरि तणो रे, प्रणमे नाण उदार ॥ वीर प्रनुजीने वांदतां रे, सफल कियो अवतार ॥ च० ॥ ए ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ षडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥

॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधी धरता, क्रियामारगमां अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥ षडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांनलो नवि एक मना, वाणी अमृत रस ऊरना ॥ अहो० ॥ २ ॥ प्रथम सामायिक जे दाख्युं, बीजुं चउविसथ्थो नांख्युं, तृतीय वांदण दिल राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग्ग पांचमे अनुसरतां, ग्रठे पच्चरकाण करतां ॥ अहो० ॥ ४ ॥ षड्विध आवश्यक जे धारे, शुन परिणामें अवधारे, श्रीजिन मारग अजुवाले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ स्थापना ज्ञानतणी मांमो, ममता माया दूरें गंमो, तो शमतावृक्ष

होये जाग्नो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इणिपरें सोहमनी वाणी, गहूंली करे चेलणा राणी, गुरु सन्मुख जोवे गुणखाणी ॥ अहो० ॥ ७ ॥ सीहोर नगरें गहूंली गाइ, कहे मुक्ति सुणो चित्त लाइ, श्रीजिन आणा धरो भाइ ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ गहूंली अठावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे, चंपावनके मेदान ॥ सुरपति गाया रे, शासनके सुलतान ॥ ए.आंकणी ॥ समवसरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल थलनां लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रे, मुनिमुख परषदा बार ॥ प्रभु महिमायें रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रवचन सारउद्धार ॥ ॥ अ० ॥१॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल छटकायां फूल बिछाय, सजी सामईयुं वंदन आय, उववाई सूत्रें रे, देशना आमृत धार ॥ गौतम पूछे रे, अंबडनो अधिकार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥ ॥ अ० ॥ २ ॥ पाणी छते तरशां व्रत पाली, गंगा रेवत वच्चें संथारी, देवलोकें पंचम अवतारी, अंबडनामें रे, ते सहुनो शिरदार ॥ अवधिज्ञानी रे, वैक्रियलब्धि उदार ॥ तापस वेशें रे पाले अणुव्रत बार ॥अ०

॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक भरिया, कंपिलपुरमां हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया, सहु को जाणे रे, अम घर उच्छव थाय ॥ घर घर होशे रे, कौतुक जोवा ते जाय ॥ देव भवांतर रे, अंबड मुक्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांभली हइडे हर्ष भराणी, बहुत साहेलीनी ठकुराणी, नामें सुभद्रा धारणी राणी, चीर पटोली रे, पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट खोली रे, अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे, साथिये मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चन्द्रमुख चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्री शुभवीरनां चरण वधावे, मंगल गावे रे, रंभा अपछर नार ॥ जगतनो दीवो रे, विश्वंभर जयकार ॥ बहु चिरंजीवो रे, त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली उगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ वीरनी आणा शिरधरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपाट दीपावंता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणा मती रागी, द्रव्य भव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लय लागी ॥ अ० ॥ २ ॥ छत्रीश छत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी रहे दूरा, शांत मुद्रामांहे ससनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी

रवाणी चित्त अनुसरता, कुमति तणा मद गालंता, आव्या राजगृही फरता ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोणिक नृपतिनी राणी, नामंमलमां रुजाणी, धवल मंगल करे गुणखाणी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अनुभव ज्ञानें चित्त ठरशे, सद्गुरु अंगें सदा वरसे, भविजलधर चातक वरसे ॥ अ० ॥ ६ ॥ एणी परें जे गुरु गुण गावे, संवरभावें चित्त लावे, महींद्रसिंह सूरि सुख पावे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २९ ॥

॥ अथ गहूंली त्रीशमी ॥

॥ सखि राजगृही उद्यानमां, उतरिया श्री जिनराज ॥ वारी जाऊं वीरनें ॥ सखि मननो ते सांसो उपशमे, जाणीयें मलीयो छे शिवपुरीनो साज ॥ वा० ॥ १ ॥ सखि देवछंदो ते देवें रच्यो, तिहां बेठा छे त्रिभुवन राय ॥ वा० ॥ सखि बारे पर्षदा तिहां मली, जीरे सती सुणवाने जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी चेलणा ते लावे गहूंअली, राजा श्रेणिकनी घरनार ॥ वा० ॥ जीरे मुक्ता ते फलनो साथियो, जीरे उपर श्रीफल सार ॥ वा० ॥ ३ ॥ सखि छवणीनी आगल गहूंअली, जीरे विच विच नागरवेल ॥ वा० ॥ जीरे दर भलुं रे दरिया तणुं, जीरे जेमां छे जाजेरी रेल ॥ वा० ॥

॥ ४ ॥ जीरे वखाण नलुं रे वीरजी तणुं, जीरे सां नले गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी नानडी, जीरे नानी वे शाकर डाख ॥ वा० ॥ ॥ ५ ॥ जीरे नानी ते प्रजुजीनी जीनडी, जीरे बूऊ व्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे नाट नणे रे बी रुदावलि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीरे आ जुगमां जोतां थकां, जीरे कोई न करे प्रजु जीशुं होड ॥ वा० ॥ जीरे नव नव ए जिन जो मले, वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जीहो उपनो अधिक आ णंद ॥ वधावो मारे आवीयो ॥ बीजे नेमीशर बहु गुणा, जीहो दीगे दोलतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ त्रीजे वधावे प्रनु तुं स्तव्यो, जीहो अगर सुवास विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुम नी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोथे वधावे प्रजु चरणनुं, जीहो धरीयें मन शुन ध्यान ॥ व० ॥ चतुर दरिसण चारित्रनां, जीहो गुण गावं गुरुग्यान ॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी, जीहो जादव गुणलय लीन ॥ व० ॥ नावुं प्रजुगु

ण भावना, जिहो आतमशक्ति नवीन ॥ व० ॥ ४ ॥ एम सघलो टल्यो आंतरो, जीहो अम तुम अतिशय एक ॥ व० ॥ ध्यायकनें वली ध्येयनो, जीहो अधिक विवेक अनेक ॥ व० ॥ ५ ॥ भाग्य भले मलि भवि जनें, जीहो जोयो श्रीजिनराज ॥व०॥ संघवी सहित स्वरूपनुं, जीहो सफल थयुं सहु काज ॥ व० ॥६॥

॥ अथ श्रीथूलीभद्रजीनी गहूंली बत्रीशमी ॥

॥ जीरे मारे थूलीभद्र गुरुराय, सातमे पाटे सोहामणा जीरे जी ॥ जीरे मारे भद्रबाहु मुणिंद, संभूति विजय सूरि तणा ॥जीरे०॥१॥ जीरे मारे पाट विशेष सुजाण, शियलगुणें अलंकस्या ॥जी०॥ जीरे मारें कोश्यायें बूझव्या ताम, जैनधर्मथी नवि पड्या ॥ जी० ॥ २ ॥ जीरे मारे जगमां राख्युं नीम, चोराशी चोवीशी लगें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे संघ चतुर्विध जाण, उछव करे उलट अंगें ॥ जीरे० ॥ ३ ॥ जीरें मारे वाजे ढोल निशान, सरणाईयु मधुरे स्वरें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे गोरी गावे गीत, सोहागण गहूंली करे ॥ जीरे० ॥ ४ ॥ जीरे मारे धन्य सकमाल प्रधान, धन्य लाछल दे मातने ॥ जीरे०॥ जीरे मारे धन्य ते नागर नात, धन्य ते सिरिया भ्रातने ॥ जीरे० ॥ ५ ॥

जीरे मारे धन्य जक्षा प्रमुख, साते बेहेनो सोहामणी॥ जीरे० ॥ जीरे मारे सूरीश्वर शिरदार, श्रीथूलिनद्र शिरोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन रात, एवा मुनिनुं खांतशुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशे मंगलमाल, जे गावे नित्य नावशुं ॥ जीरे०॥ ७ ॥इति ॥

॥ अथ पजूसणनी गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ म्हारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सह गुरु संयोगें रे ॥ मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच नेली मलीनें टोली, गहूंली करे मन नोली रे ॥ मा०॥ १ ॥ घुंघटपट खोली गुरुमुख जोती, तन मनना मल धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परिणतिनी वाली शुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी गुरुजीनी वाणी, निसुणो नविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥ उपशम नावो ने निंदा निवारो, जीव सहुशुं हित धारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग मूले संघ सहु खामो, कषायतणा मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत तप कीजें, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रनावना महिमाने देखी, हरखे धरमना गवेषी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख

जोवो, नवनवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कल्प सुणीजें प्रजावना दीजें, अठाइ महिमा इम कीजें रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावो ने वीरजिन ध्यावो, मलूक जावना जावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ अथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ आढी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोल रे ॥ रंगीली ॥ लाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ ॥ बुरानपुरनी बांधणी रे, रंगाणी उरंगावाद रे ॥ रंगीली ॥ चोल मजीठना रंगथी, कसुंबे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरत शहेरमां संचस्यां रे, जातां जिन वाणीनें माट रे ॥ रंगीली ॥ चोराशी चोकने चहूवटे रे, दीठां दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ३ ॥ नणदी वीराजीने वीनवे रे, ए चूनडीनी होंश रे॥ रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपट ने मोर रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मूलवी रे, पासें पीयुजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित सासुना केणथी रे, सोनइया दीधा सवा लाख रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, नानी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥

आ० ॥ ६ ॥ चूनडी उढिनें संचरयां रे, जातां जिनद रबार रे ॥ रंगीली ॥ माणकमुनियें कोडथी रे, गाई ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली॥आ०॥ ७ ॥ इति० ॥३४॥

॥ अथ गहूंली पांत्रिशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रिगुरुपद पंकजनी सेवा, लागी छे मुज मन हेवा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गुण दरीयो सुपरें नरियो, मुजथी किम जाये तरियो रे ॥गु०॥ १ ॥ पांच ज्ञानमांहे उपकारी, ए श्रुतनी बलिहारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना नव सुविलासें, संख्याता नव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना नाव ते ज्ञानथी कहीयें, सज़ुरु मुखथी लहीयें रें ॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते नासे, दर्शन मोहनी नासे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आतम केरो, टाले ते नवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितविण संजम नहिं रचना, आगम मांहे छे वचना रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकित सहित करे जे किरिया, तें नवसमुद्रथी तरिया रे ॥ गु० ॥ एहवी वाणी सोहम केरी, नासे कर्मजो वैरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोहम पाट परंपर राजे, विजयदेवेंद्र सूरि गाजे रे ॥ गु०॥

स्वस्तिक पूरे डुःखने चूरे, वधावे चढते नूरें रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ सूरि गुणे बत्रीश सोहावे, विजयानंद पद पावे रे ॥ गु० ॥ प्रेमथी नावे नवनिध पावे, अमृत शिव सुख ध्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३५॥

॥ अथ गहूंली बत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाला नमरजी ॥ ए देशी ॥

॥ चरणकरणशुं शोनता ॥ व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥ नविजन मानस हंस रे ॥ जगत उपकारी रे सुगुरुजी ॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ व्र० ॥ लोन तणो नहिं अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण नस्या, ॥ व्र० ॥ षटकारण लिये आहार रे ॥ ज० ॥ सामुदाणी गोचरी ॥ व्र० ॥ ज्ञानरतन नंमार रे ॥ ज० ॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ व्र० ॥ वनिता धरिय विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलियें परवरी ॥ व्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ अस्तिक पीठनी उपरें ॥ व्र० ॥ अनुनव मुक्ता श्वेत रे ॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ व्र० ॥ वधावती धरी हेत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गहूंअली ॥ व्र० ॥ मुनिगुणमणि धरि हाथ रे ॥ ज० ॥

श्रीशुनवीरनी देशना ॥ ब्र० ॥ सुणतां मले शिवसाथ रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥अथ गहूंली साडत्रीशमी ॥

॥ केसरिया चडो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही वनखंम विचाल, आव्या वीरजिणंद दयाल, वंदे श्रेणिकनामें नूपाल तो ॥ वीर जगत गुरु वंदना करियें ॥ वंदना करियें ने नवजल तरियें तो ॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो ॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी, सेडूक ब्राह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥ वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण लही जल तरश अपार, जलमां मेडकनो अवतार तो ॥ वी० ॥ ४ ॥ वारी हारी नारि वचनथी, पूरवनव लहि चाल्यो वनथी, मुज वंदन हरख्यो तन मनथी तो ॥ वी० ॥ ५ ॥ तुरु घोटक पद हणियो जाम, लहि सुर नव आव्यो एणें ठाम, श्रेणिक देखे तुरु परिणाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोक्षगमन कहो मुजने सार, दर्दूर रंक तणो अधिकार, उपदेशमाला ग्रंथ मोकार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी

चेलणा हर्ष न मावे, मुक्ताफलशुं गहूंली बनावे, श्री शुभवीर जिणंद वधावे तो ॥ वी० ॥ ८ ॥ ३७ ॥

॥ अथ गहूंली आडत्रीशमी ॥

॥ द्वारका नगरी दीपती ॥ जिन वंदीयें ॥ वसे जादव कुलनो परिवार ॥ रे जिन वंदीयें ॥ जिनजी ते आवी समोसर्या ॥ जि० ॥ साथें गणधर वर अढार ॥ रे जि० ॥ १ ॥ अढार सहस साधु भला ॥जि०॥ ते तो लब्धि तणा रे भंमार ॥ रेजि० ॥ समवसरण देवें रच्युं ॥ जि०॥ तिहां बेठी पर्षदा बार ॥रेजि०॥ ॥२॥ कृष्णजी वांदवा आविया ॥ जि० ॥ साथें अंते उरनो परिवार ॥ रे जि० ॥ गहूंली ते करे मन रंग शुं ॥ जि० ॥ सत्यभामा रुक्मिणी नार ॥ रेजि० ॥ ॥३॥ पहेरी पटोलां दाडमी ॥जि०॥ पाये झांझरनो झमकार ॥ रेजि० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो ॥ जि० ॥ पांच रतन्न ते पंचाचार ॥ रेजि० ॥ ४ ॥ लली लली जेती लूंठणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल ॥ रे जि० ॥ कृष्णजीयें प्रभुजीने पूछियुं ॥ जि० ॥ मुज श्रम. चडयो रे अपार ॥ रेजि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी कहे श्रम उतर्यो ॥ जि० ॥ तमें कारज कर्युं मनो हार ॥ रेजि० ॥ सातमीनी त्रीजी करी ॥ जि० ॥

तमें समकित नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुज तार ॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु निरखतां ॥जि०॥ तमे जय जय नणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥३८

॥ अथ गहूंली उंगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरनव लह्यो रे, श्रावक कुल मनोहार रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे,धन्य तेहनो अवतार ॥ गुरुने बोलडीये,मोह्या मोह्या रे त्रिभुवन लोक॥ गुरुने बोलडीये ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे, करे नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सजी करीने, आवे गुरु दरबार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करीने,वांदी बेसे ठाय रे ॥ उठ हाथ अलगी रहिनें, गहूंली पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ ॥ चिहुंगति डुःख निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल मांहे वडो ने, साथीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ वधावे गुरुरायने रे, पछें करे पच्चरकाण रे ॥ लूंछणीयां लटके करे ने, नाव नलो मन आण ॥ गु० ॥ ५ ॥ आगम अर्थने धारती रे, करती विनय विशेष रें ॥ एम आतमने तारती रे, सौनाग्यलक्ष्मी सुविशेष ॥ ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ गहूंली चालीशमी ॥

॥ रूडी रे राजगृही उद्यानें, पंचसया मुनिमान हो ॥स्वामि ॥ आवीया गुरु गोयम स्वामी ॥ वनपालें जई राय वधाव्या, हर्ष वधामणी लाया हो ॥ स्वा० ॥ ॥ आ० ॥ १ ॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कइयें केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक अंतेउर सहु तेडी, जीत नगारां गेडी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ चेडा रायतणी तस बेटी, चेलणा गुणमणि पेटी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक रायतणी पट राणी, वीरें आप वखाणी हो ॥ स्वा० ॥ आ०॥ ३ ॥ साथीयडो कीधो लटकालो, मंगल रंग रसाल हो ॥स्वा० ॥ आ० ॥ ललि ललि गुरुजीने लूहणां करती, कीर्त्तिनां दानज देती हो ॥ स्वा० ॥ आ०॥ ४ ॥ देशना सांभली आनंद पामी, धर्म यथोचित राख्यो हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ उपगारी गुरुना गुण गाती, समकित रतनने चहाती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ श्री पालतणीपरें तरसे, शिव रमणी सुख वरसे हो ॥ स्वा० ॥ आ०॥ जे कोई गहूंली एणी परें करशे, मुक्ति ताणां सुख वरशे हो ॥ स्वा०॥ आ०॥ ६ ॥इति ॥

॥ अथ गहूंली एकतालीशमी ॥

॥ सोहमस्वामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी ॥
मुनिगुणरत्न भंमार रे ॥ वालो मारो एही रे साहेब
जी ॥ सूरि बत्रिश गुणें शोभता ॥ सु० ॥ धरता माहा
व्रत सार रे ॥ वालो० ॥ १ ॥ पंचेंड्रिय संवरपणे ॥ सु०॥
नवविध ब्रह्मचर्य धार रे ॥ वा० ॥ पंचाचारज पा
लता ॥ सु०॥ टाले क्रोधादिक चार रे ॥ वा० ॥२॥
समिति गुप्ति निजशुद्धता ॥ सु० ॥ षटकायिक प्रति
पाल रे ॥ वा० ॥ एहवा गुरुपद सेवीयें ॥ सु० ॥
पामीयें मंगलमाल रे ॥ वा० ॥३ ॥ विहार करंता
आवीया ॥ सु० ॥ मुंबई बंदर मझार रे ॥ वा० ॥
संघ सकल अति भावशुं ॥ सु० ॥ सेवा करे नर नार
रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अचल गछपति दीपता ॥ सु० ॥
रत्नसागर सूरिराय रे ॥ वा० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणम
तां ॥सु०॥ संघने कल्याण थाय रे ॥वा०॥५॥इति॥४१॥

॥ अथ गहूंली बहेंतालीशमी ॥

॥ आवो हरि लासरिया वाला ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सखि वंदनने जइयें, वंदीने पावन तो थइयें
॥ चालो०॥ ए आंकणी ॥ माता त्रिशलाना जाया,
धर्म धुरंधर कहेवाया, गुणशील वनमांहे आया

॥ चालो० ॥ १ ॥ शोना शी वरणवुं बहेनी, त्रिभुवनमां कीर्त्ति जेहनी, बलिहारी जाउं हुं एहनी ॥ ॥ चालो० ॥ २ ॥ ठाजे केवल ठकुराइ, सादि अनंत गुण पाइ, गणधर आगममां गाइ ॥ चालो० ॥ ३ ॥ सुरकोडी सेवा करता, उंगणीश अतिशय अनुसरता, नावें नवसायर तरता ॥ चालो० ॥ ४ ॥ चौद हजार मुनि संगें, धारक चरण करण रंगें, शील सन्नाह धर्यां अंगें ॥ चालो० ॥ ५ ॥ श्रेणिक चेलणा सहु आवे, मुक्ताफल नरीने लावे, मंगल आठ करी गावे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ गातां दुःख दोहग नांजे, मंगल महिमंगल काजे, इम कह्यो दीप कविराजें ॥ चालो० ॥ ७ ॥ इति ॥४२॥

॥ अथ गहूंली त्रेंतालीशमी ॥

॥ वाडीना नमरा,दाख मिठी रे चांपानेरनी ॥ए देशी॥

॥ जीरे कामनी कहे सुणो कंथ जी, जीरे फलिया मनोरथ आज रे ॥ नणदीना वीरा गणधर आव्या ठे चालो वांदवा॥ जीरे नवोदधि पार उतारवा, जीरे तारण तरण जहाज रे ॥ न० ॥ १ ॥ जीरे गुणशैल्य चत्य समोसस्था,जीरे वीरतणा ठे पटोधार रे ॥न०॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार ठे, जीरे तीरथना अवता

र रे ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहर्यां, जीरे प्रगट्या छे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परिसहनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशमखड्ग रे ॥न०॥३॥ जीरे प्रवचन मातने पालता, जीरे समिति गुप्ति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम मोटका, जीरे पंचमहाव्रत भार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जीरे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोय कर जोडी हजूर रे ॥ न० ॥ जीरे अमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पाप पफल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी वयण रे मीठडां, जीरे वांद्या छे गुरु गणधार रे ॥न०॥ जीरे गुरुमुखथी सुणी देशणा, जीरे आनंद अंग अपार रे ॥न०॥६॥ जीरे मुक्ता ने रयणें वधावती, जीरे गहूंली चित्त रसाल रे ॥न०॥ जीरे निजभव सुकृत संभारती, जीरे जेहना छे भाव विशाल रे ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनंदन बलिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्य जी, जीरे वीरशासन शणगार रे ॥न०॥८॥ इति ॥४३॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरंता वसुधा तलें, राजगृही उद्यान

हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन सुर नर कोडीशुं परवस्था, ज्ञातनंदन नगवान हे, अलबेली हेली॥ सुरिजन, शासन नायक वंदीयें ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ सुरिजन तेजें तरणि परें फींपता, समतायें शारद चंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन गोपथका शुंनामनें, थिरतायें मेरु गिरिंद हे, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ २ ॥ सुरिजन योगासन धारी घणा, शमताधर मुनिसंग हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन ज्ञान गजें कोइ गाजता, राजता ध्यान तुरंग हें, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ ३ ॥ सुरिजन प्रातिहार्य वर आठशुं, सेवित सुरसुलतान हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन गुणशील चैत्यमां नविकनें, दे उपदेशनुं दान हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ४ ॥ सुरिजन नंदावती नंदोत्तरा, शोल सजी शणगार हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन कुंकुम अक्षत फल लइ, श्रेणिकनी घर नारी हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ५ ॥ सुरिजन सुंदरी पूरे साथीयो, प्रणमी वधावे जिणंद हे, अलबेल हेली ॥ सुरिजन अरिहा मुख अवलोकीने, पामे परमानंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ६ ॥ सु

रिजन कीजें उंची एम साचवी, शासन नक्ति विशा
ल हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन प्रनुनी वाणी अमृत
समी अछे, रंगें सुणीयें रसाल हे, अलबेली हेली
॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ अथ गहूंली पीस्तालीशमी ॥

॥ सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे उनी रहेने ए देशी ॥
॥ सुण साहेली, जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ॥
मुनि मुख जोतां, मन उलसे तन विकसे आपण बे
ने ॥ ए आंकणी छे ॥ थावर तीरथ डुर्गति वारें, प
ण घर मेली जइयें ज्यारें, विधियोगें ध्यान धरे त्या
रें, संसार समुइथकी तारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम
मुनि मारगमां फरता, संयम आचरणा आचरता,
जगजीव उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन
करता ॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचीरण बावन परिहर
ता, बोले दशवैकालिक करता, गणि पेटी बहु श्रुत
नी धरता, मुखचंद्रथकी अमृत फरता ॥ सुण० ॥
॥ ३ ॥ वर ज्ञान ध्यान हय गय वरिया, तप जप च
रणादिक परिकिरिया, विरति पटराणीशुं वरीया, मु
निराज सवाइ केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित
गीतारथ गुरु आगें, विधियोगें वंदे गुणरागें, कर

कंकण पग ऊांजर वागे, गहूंली करतां अनुजव जा
गे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कुंकावटीयें केशर लेता, करी स्व
स्तिक पातकडां धोती, वधावती उज्ज्वल मोती, वल
ती जलती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठ
वती मधुरा रावे, गुणवंती तिहां गहूंली गावे, आ जव
सौजाग्यपणुं पावे, शुजवीर वचन हैयडे जावे॥सु०॥७

॥ अथ अगीयार गणधरनी गहूंली बेंतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांमवे ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रजूति जेहनुं बे नाम ॥
अग्निजूति वखाणीयें, बीजो प्रजुगुण धाम ॥ गणधर
शोजा हुं शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वायुजूति त्रीजा
वजीर बे,गौतमगोत्र जगवंत॥ चोथा व्यक्तजी जाणीयें,
कीधा जवना रे अंत ॥ गण० ॥ २ ॥ स्वामी सुध
र्मा बे पांचमा, मंमित बठा गणधार ॥ मोरिय पुत्र
बे सातमा, सहु ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥
अकंपितजी बे रे आठमा,अचलजी नवमा रे जाण॥
मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण
॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रजासजी वंदीयें, एकादश
मा गणधार ॥ गणधर गछपति गणपति, तीरथ
ना अवतार, द्वादशांगी धरनार, सहु मुनिना

शिरदार, पाम्या जवनो रे पार, नामें जय जयकार, वंदो वार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेइ प्रभु वीरनी, सहुजनने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पधारीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय, निसुणी हर्ष न माय, सुणतां मनडां लोभाय ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सहीयर गावे छे गीत ॥ दीपविजय कवि राजनी, ए जिनशासन रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ गहूंली सुडतालीशमी ॥

॥ गछ राया रे ॥ ए देशी ॥

॥ चित्त समरुं सरसति माय रे, वली वंदूं सद्गुरु पाय रे, हुंतो गाइश तपगछ राय रे ॥ गछ राया रे ॥ १ ॥ छत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट छाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गुरु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता रे, गुरु संयम धर्ममें राता रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्त्व संभाले रे, गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे ज्ञाननी दृष्टि निहाली रे, गुरु देशना दे लटकाली रें, गुरु प्रतपे कोडि दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधु

रें वचनें वरसें रे, भव्य जीव तणा मन हरसे रे, गुरु गुण सुणवा मन तरसे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ करो गहूंली गछपति आगें रे, वधावो गुरु महाभागें रे, गाउ मंगल मधुरें रागें रे ॥ ग० ॥ ७ ॥ गुरु धन्य आणंदि बाइ जाया रे, साहेब राजकुलमां सवाया रे, श्री विजयलक्ष्मी सूरिराया रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ गुरु प्रेम पदारथ पाया रे, जेणे धर्मना पंथ बताया रे, एम दीपविजय गुण गाया रे ॥ ग० ॥ ए ॥ इति ॥४७॥

॥ अथ केशीकुमारनी गहूंली अडतालीशमी ॥

॥ जीरे वर वरघोडे संचर्यो, जीरे बिहुं पासें चमर वींजाय ॥ जीया वरंनी घोडली ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे कुंकुम छडो देवरावीयें, जीरे मोतीना चोक पूरावो ॥ वधाइ वधाइ छे ॥ जीरे घर रघ गूडी रे सज करो, जीरे सोहागण मंगल गावो ॥ वधाइ वधाइ छे ॥ १ ॥ जीरे आज वधाईना कोड छे, जीरे सेतंबी नयरी मझार ॥ वधा० ॥ जीरे पास प्रभुजीना पटधरु, जीरे आव्या छे केशी कुमार ॥ वधा० ॥ ॥ २ ॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार छे, जीरे जीवदया प्रतिपाल ॥ वधा० ॥ जीरे डुक्कर परिसह झीपता, जीरे जगजसकार प्रनाल ॥ वधा० ॥ ३ ॥

जीरे छंड्या छे मोह संसारना, जीरे व्रतधारी संयम धार ॥ वधा० ॥ जीरे चरण करणनी सित्तरी, जीरे सेवा लहे जव तार ॥ वधा० ॥ ४ ॥ जीरे तपीया छे केइ मुनिराज जी, जीरे त्यागी छे केइ मुनिराज ॥ वधा० ॥ जीरे मुनि गुणगाणे वरतता, जीरे शिव वधू वरवानें काज ॥वधा०॥ ५॥ जीरे नृप परदेशी रे हरखियो, जीरे पहोतो छे वंदन काज ॥ वधा० ॥ जीरे गुरु उपकार संजारतो, जीरे पूज्य छे गरीबनि वाज ॥ वधा० ॥ ६ ॥ जीरे नृपपटराणी गहूंअली, जीरे पूरे छे पूज्य हजूर ॥ वधा० ॥ जीरे दीपविजय कविराजने, जीरे वंदो उगमते सूर ॥वधा०॥७॥इति॥

॥अथ गहूंली उंगणपच्चासमी॥ देशी उपरनी गहूलीनी॥

॥ जीरे सूर उगमती गहूंअली, जीरे गुरु आगल श्री कार ॥ मनोहर गहूंअली॥ जीरे सहीरे समाणी संच री, जीरे पूरें बहु परिवार ॥ म० ॥ १ ॥ जीरे चालो रे सहीयो उतावली, जीरे हैयडे हर्ष न माय॥ म० ॥ जीरे समकेतने अजुवालवा, जीरे वंदीयें श्री गुरुरा य ॥ म० ॥ २ ॥ जीरे सरखा सरखी सुंदरी, जीरे टोलें मली गह घाट ॥ म० ॥ जीरे आछा शालु उ ढणी, जीरे उपर नवरंग घाट ॥ म० ॥ ३ ॥ जीरे

नावें सद्गुरु नेटवा, जीरे सहु मलीने साथ ॥ म० ॥ जीरे उलटें आव्या अप्पा सहि, जीरे सोवनथाली हाथ ॥ म० ॥ ४ ॥ जीरे हीरें जडित कुंकावटी, जीरे मांहे कपूर बरास ॥ म० ॥ जीरे मांहे मृगमद महमहे, जीरे केसर चंदन खास ॥ म० ॥ ५ ॥ जीरे चतुरा चाली चमकती, जीरे ठमकेशुं ठवती पाय ॥ म० ॥ जीरे चरणे नेउर रणझणे, जीरे मा निनी मानें गाय ॥ म० ॥ ६ ॥ जीरे पाये वींछूआ वाजणां, जीरे झांजरना रमजोल ॥ म० ॥ जीरे प्रे मेशुं गहुंअली करी, जीरें नवखंडी रंगरोल ॥ म० ॥ ॥ ७ ॥ जीरें पूरी सोहागण साथीयो, जीरे मोतीडे मनरंग ॥ म० ॥ जीरे भूंगल भेरी भणहणे, जीरे वाजे ढोल मृदंग ॥ म० ॥ ७ ॥ जीरें त्रण खमा समण देइने, जीरे वंदे सहु नर नार ॥ म० ॥ जीरे संघ मल्यो सहु सामटो, जीरे उत्सवनो नहिं पार ॥ म० ॥ ए ॥ जीरे सद्गुरु दीये तिहां देशना, जीरे वांची सूत्रविचार ॥ म० ॥ जीरे जलधरनी पेरें गाजता, जीरे वरसता अमृतधार ॥ म० ॥ १० ॥ जीरे मीठी रे मीठी मीठडी, जीरे मीठी साकर द्राख ॥ म० ॥ जीरे तेहथकी पण मीठडी, जीरे मीठी म

ह्वारा गुरुजीनी नाख ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचित्तें जे सांनळे, जीरे पामे ते नवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य नित्य रंग वधामणां, जीरे सुख पामे संसार ॥ म० ॥ ॥ १२ ॥ जीरे ह्वीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगछ केरा राउ ॥ म० ॥ जीरे अमें अमारा गुरुजीने गा यशुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउ ॥ म० ॥ १३ ॥ जीरे दानशीयल तप नवना, जीरे जे सुणे ए जिनवाणी ॥ म० ॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे ते लहे कोडि कल्याण ॥ म० ॥ १४ ॥ इति गहूंली ॥४ए॥

॥ अथ गहूंली पच्चासमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ बेनी राजगृह्ही उद्यान के, वीर प्रनु आविया रे लोल के ॥ बेनी समवसरण मंमाण, रचे सुरवर तिहां रे लोल ॥ बेनी चार निकायना देव, मळी तिहां आविया रे लोल ॥ बेनी परखदा बेठी बार, सुणे प्रनु देशना रे लोल ॥ १ ॥ बेनी सोह्म गणधर मुनि राय के, नर नारी मळी रे लोल ॥ बेनी चौद सहस परिवार के, आवी परवरया रे लोल ॥ बेनी श्रेणिक राय प्रमुख, वंदन मन नावियां रे लोल ॥ बेनी राणी चेलणा नार, नरि थाळ वधावीया रे लोल ॥ २ ॥ बेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे

लोल ॥ बेनी सहियरो मली मंगल गाय के, वाजें डुंडुभि रे लोल ॥ बेनी समकित धरती सार के, प्रभु गुण आलवे रे लोल के ॥ बेनी सूत्र सुणे मनभाव के, अरथने धारती रे लोल के ॥ ३ ॥बेनी प्रभुवंदन सुपसाक के, चिहुं गति चूरती रे लोल ॥ बेनी सोह म गणधर पाट, परंपर शोभती रे लोल ॥ बेनी चं द्रोदयरत्न गणधार के,लवणपुर राजता रे लोल के ॥ बेनी चउविध संघ सुपसाय . के, मांहे गाजता रे लोल के ॥ ४ ॥ बेनी धर्मोपदेश सुणाय, मिथ्यात्वनें वारता रे लोल ॥ बेनी शांतिचरित्र कहेवाय के, भविने तारता रे लोल ॥ बेनी गहूंली करती जोय के, ललि ललि लूंछणां रे लोल ॥ बेनी सामायिक पोसह समुदाय, करे वली पूछणां रे लोल के ॥ ५ ॥ बेनी स्थानक तप आराधे, मन अति भावशुं रे लोल ॥ बेनी वली रोहणी तप अति भाव के, पाले प्रेमशुं रे लोल के ॥ बेनी समेतशिखर गिरि भेटण, अल जो छे घणुं रे लोल के ॥ बेनी पुण्य पसायें तेह, मनो रथ सवि फल्या रे लोल के ॥ ६ ॥ बेनी संवत उगणीशें वीशमां, कारज साधीयां रे लोल के ॥ बेनी चैत्र शुदि तेरशने,भोमे वांदीया रे लोल के ॥ बेनी कहे क

वियण कर जोड,करी एक वीनति रें लोल के ॥ बेनी चंद्रोदयरत्नसूरिंदने,तित्य नित्य वंदती रे लोल ॥७॥

॥ अथ गहूंली एकावनमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ बेनी गुरु गछपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो० ॥ बेनी मुनि मंमल महाराज के, मनघर आणीयें रे ॥ लो० ॥ १ ॥ बेनी शासनना सुलतान, वजीर श्री वीरना रे ॥ लो० ॥ बेनी लब्धिवंत निधान, के श्रीगुण हीरना रे ॥ लो० ॥ २ ॥ बेनी मगधदेश मफार के, गोवरगाम छे रे ॥ लो० ॥ बेनी वसुनूति पृथिवी नार के,माता नाम छे रे ॥ लो० ॥ ३ ॥ बेनी सोवन वान समान,शरीर सकोमलां रे ॥ लो०॥ बेनी लोचन युगल प्रधान के, कर क्रम कोमला रे ॥ लो० ॥ ४ ॥ बेनी ज्ञान रयण नंमार, सिद्धांतना सागरु रे ॥ लो० ॥ बेनी माहाव्रत जस मनोहार, महिमा गुणआगरू रे ॥ लो० ॥ ५ ॥ बेनी नहीं प्रतिबंध विहार, नहीं ईहा कशी रे ॥ लो० ॥ बेनी सकल जंतुहितकार, दया जस मन वसी रे ॥ लो० ॥ ६ ॥ बेनी नयरी चंपा उपवन्न के, पूज्य पधारीया रे ॥ लो० ॥ बेनी श्रेणिकसुत धनधन्य के, वंदन पधारिया रे ॥ लो० ॥ ७ ॥ बेनी देशना दीये गुरु

राय, नविक प्रतिबोधता रे ॥ लो० ॥ बेनी प्रह ऊठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ लो० ॥ ॥ ८ ॥ बेनी कोणिक नृपति नार के, गहूंली लावती रे ॥ लो० ॥ बेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीयें घ धावती रे ॥ लो० ॥ ए ॥ बेनी कामिनी कोकिलवाणि के, गुरुगुण गावती रे ॥ लो० ॥ बेनी सौनाग्य लक्ष्मी सुखखाण के, सदा सुख पावती रे ॥ लो० ॥ बेनी गुरु गछपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो० ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली बावनमी ॥

॥ गरबानी देशी बेनी अपापा नयरी उद्यान के, वाजां वा गियां रे लोल ॥ बेनी देववाजिंत्र अनेक के, घनाघन गा जीयां रे लोल ॥ १ ॥ बेनी इंद्रजूत्यादि अग्यार के, ब्राह्म ण दीपता रे लोल ॥ बेनी वेदवादना जाण के, बहु वा द जींपता रे लोल ॥ २ ॥ बेनी संशय छे अति गूढ, मिथ्यामति पूरिया रे लोल ॥ बेनी श्रीजिन अमृत वाणी के, सुणि सुख पामीया रे लोल ॥ ३ ॥ बेनी छांमी सकल जंजाल के, हुवा व्रत नाविया रे लोल ॥ बेनी इंद्र सजानो थाल, केवा जश आविया रे लोल ॥ ४ ॥ बेनी अरिहा ए आचार के, तीरथ स्थापिया रे लोल ॥ बेनी लावो गहूंली गेल के, हरखें वधा

विया रे लोल ॥ ५ ॥बेनी वधावो श्री जिनराज, करो नित्य भामणां रे लोल ॥ बेनी गाउ मंगलगीत के, लीजें वारणां रे लोल ॥ ६ ॥ बेनी बांधो तोरण बार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ बेनी गाउ मंगलगीत के, मली बहु बालिका रे लोल ॥ ७ ॥ बेनी गौतम केवलज्ञान के, सोहम गछधणी रे लोल ॥ बेनी आपी जंबूने पाट के, पहोता शिवमणि रे लोल ॥ ८ ॥ बेनी करतां एहनुं ध्यान के, लहीयें जश घणो रे लोल ॥ बेनी विबुध कहे श्रीवीरनें, सहु जय जय भणो रे लोल ॥ ए ॥ इति ॥५२॥

॥ अथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥ मुनि पंचम गणधर वीरना रे ॥ मुनि वंदीयें ॥ साथें पांचशें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसस्या शुभ गाम रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥ दशविध संयतिनो धर्म रे ॥ गु० ॥ संयम सत्तर प्रकारथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय भलो रें ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य नववाडें युक्त रे ॥ गु० ॥ रत्नत्रयि आराधता रे ॥ मु० ॥ बार भेदें तपमां रक्त रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया

लोजने रे ॥ मु० ॥ ऊंपता करे उग्र विहार रे ॥गु०॥ चरणसित्तरी पालता रे ॥ मु० ॥ तिम करणसित्तरी सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदनहेतें आविया रे ॥ मु० ॥ राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेलणा लावे गहूंअली रे ॥ मु० ॥ घाट शील पहेरी मनोहार रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ आजूषण सत्यवचननां रे ॥ मु० ॥ करे स्वस्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अक्षत था पती रे ॥ मु०॥ करे लूढणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥ ॥ ६ ॥ देशना सांजले हर्षशुं रे ॥मु०॥ कहे धन धन तुम गुरुज्ञान रे ॥गु०॥ उत्तम गुरुपद पद्मनी रे ॥मु०॥ सेवा करतां लहे शिवगाण रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ५३ ॥

॥ अथ गुरु आगल गहूंली चोपनमी ॥

॥ तमें पीतांबर पेर्यां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ चेलणा लावे गहूंली ॥ गुरु ए रूडा ॥ श्रेणिक नृप घरनार ॥ सजनी ए रूडा ॥ सोहम स्वामी समोस र्या ॥ गु० ॥ प्रजु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ ठ त्रीश ठत्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोजित पुण्य पवित्त ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरशी गारे चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चोद ठे ॥ गु० ॥ खांत्यादिक दश धर्म ॥ स० ॥ बारह जावना जाविया

॥ गु० ॥ एह छत्रीशी मर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण तणा ॥ गु० ॥ तप आचारें युक्त ॥ स० ॥ क्रोधा दिक चिहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्त्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव कल्पी उग्र विहार ॥ स० ॥ नव नीयाणां परहर्यां ॥ गु० ॥ नव वाडें व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम बा जोठ उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साथियो पूर ॥ स० ॥ मूल उत्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अक्षत नूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठें कामिनी ॥ गु० ॥ सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणक मोती लूंछणां ॥ गु० ॥ श्री जिनशासन रीत ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५४

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पञ्चावनमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल सजनी रे म्हारी, समवसरणनी शोजा सारी ॥ प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस ठाजे ॥ सांजल० ॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो, रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो ॥ त्रीजो रत्न तणो ग ढ सोहे, मणि कोसीसें मनडुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥ जुगतें सुरवर रे जडीयां, वीश हजार जेहनां पावडी यां ॥ मध्यें रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंहासन

सोहे अपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमान, जाणे अभिनव उदयो भाण ॥ देव डुंडुभि नादें गाजे, वाजित्र कोडि गमे तिहां वाजे ॥ सां० ॥ ४ ॥ सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूल ॥ जाणे वसंत ऋतु बहु फूली, भ्रमरा कुसुम कुसुम रह्या फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ थै थै नाचे सुरवधू बाला, गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चिहुं दिशि चामर रे ढलके, मणिमुक्ताफल तोरण झलके ॥ सां० ॥ ६ ॥ शिर पर छत्र अनोपम सार, पुठें भामंमल तेज अपार ॥ बेठी पर्षदा रे बार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥ सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामें चेलणा गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोली, करती गहूंली भामिनि भोली ॥ सां० ॥ ८ ॥ ललि ललि नमती रे भावें, मुक्ताफलशुं वीरने वधावे ॥ हसि हसि जिनमुख रे जोती, जाणे भवडुःखडांने खोती ॥ सां० ॥ ए ॥ एणी परें जे कोइ गहूंली करशे, पुण्य पनोती भवजल तरशे ॥ कीर्त्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥ ५५ ॥

॥ अथ गहूंली छप्पनमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन वाने, राजगृही नयरी उद्या

ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु गौतम स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन०॥ १ ॥ ज्ञानादिक गुण मणि जरीया, उपशम रस केरा दरी या हो ॥ धन० ॥ मुनि पंचसया परिवारें, जे आप त र्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ आव्या जाणी चउ नाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चे लणा नामें गुण पेटी, चेटक माहाराजनी बेटी हो ॥ धन० ॥ ३ ॥ आवे गणधर वांदवा, शुद्ध समके त लाज लहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति नित्य कर जोडी, दुर्दम मद आठने मोडी हो ॥ धन० ॥ ४ ॥ करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो ॥ धन० ॥ करे लूठणां गुरुमुख निरखी, हैयडामांहे घणुं हरखी हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निसुणी सद्गुरुनी वाणी, मीठी जे अमिय समाणी हो ॥ धन० ॥ करे निर्मल समकित करणी, घरे पहोती समकित घरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सोह वधा रो, करो जवियण सफल जमारो हो ॥ धन० ॥ ध्यावो अविनाशी धाम, उलसे निज आतम राम हो ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तावनमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥
॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामें सोहम स्वामी, नविकमन नाविया ॥ विषय प्रमाद कषाय, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरिणति नजी ॥ १ ॥ नीरागी नगवान, करे गुण देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे नविजना ॥ सुणवा जिनवर वाण, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारी ना थोक के, हर्ष मनें बहु ॥ २ ॥ वसन आनूषण व्रत, तणा अंगें धरे ॥ कोणिक नूपति नार, हवे गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरना, साथें आवती ॥ आतम असंख्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धाकुंकुम घोली, स्वस्तिक करे नावथी ॥ आतम पीठनी उपर, जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, इम गहूंली करे, अनुनवनां करि लूंठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ द्रव्यनावथी एणी परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंती श्राविका, नव सायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥५७॥

॥ अथ गहूंली अठावनमी ॥

॥ चरणकरणगुणआगरु रे ॥ गणधर ॥ गिरूआ गौतम स्वाम ॥ सुहावो गहूंअली रे ॥ सुरगुरु सुरतरु सुरमणि रे ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु० ॥ १ ॥ नयरी विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान वड शिष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्र अणगारमां रे ॥ ग० ॥ तिलक समान जगीश ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचित कज उपरें रे ॥ ग० ॥ बेसी वरसे वयण ॥ सु० ॥ कन काचल चूला चढ्यो रे ॥ ग० ॥ पुष्कर जलधर अय न ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥ काल जबूके कान ॥ सु० ॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे॥ ग० ॥ चतुरा चंपकवान ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुंकुम रयण क चोलडी रें ॥ ग० ॥ रजत रकेबी हाथ ॥ सु० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ पंचाचार उवारणे रे ॥ ग० ॥ वारू पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे ॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उंगणशाठमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही रलीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुग

म ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ बेहेन ड मोरी हे ॥ आवो सवाइ गुरु नेटवा, कांइ मेटवा कर्म कठोर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ मुनि गणतारा चंद ज्युं, आव्या गणधर गौतम स्वाम ॥ सा० स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ १ ॥ जेह पंचेंड्रिय वश करे, वली पाले पंचा चार ॥सा०॥ जेह पंच समिति गुप्ति धोरी परें, वहे पंच महाव्रत नार ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाडें ब्रह्म धरे सदा, वली परिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे लब्धि अट्ठावीशनो धणी, जयो आठ प्रानाविक राय ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ अ०॥ ३ ॥ पहेरण पीत पटोलडी, उपर उढण नव रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोल सुसाथीयो, करे अक्षत पूरी सुघाट ॥सा०॥स०॥बे०॥आ०॥४॥ वली ललि ललि कीजें लूठणां, लेइ रजत कनकनां फूल ॥ सा०॥ करो जिन शासन प्रनावना, वजडावो मंगल तूर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ०॥ ५ ॥ इति ॥ ५ए ॥

॥ अथ गहूंली शाठमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वाला राजगृही उद्यान के, वीर समोसर्या रे लोल के ॥ वाला मलिया चोशठ इंड के, बहु परिवारशुं रे लोल के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वधामणी

माहाराजनी, श्रेणिक सांभली रे लोल के ॥ वाला श्रेणिक पुर जन लोक के, सौ मली एकठां रे लोल के ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला वंदी बेठो भूप के, प्रभुजी आगलें रे लोल ॥ वाला चेलणा घूंघट ताणी के, उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला स्वस्तिक पूरी पास, वधावे मन रुली रे लोल के ॥ वाला लूंछणां करे वार वार, सोहागण सहु मली रे लोल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के, मली घणी बालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें जे जिन आगल, करे नित गहूंअली रे लोल ॥ वा० ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, भवोदधि दुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निरधार के, चित्त चोखे करी रे लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ पर्यूषणने विषे कल्पसूत्र पधरा ॥

॥ ववानी गहूंली एकशठमी ॥

॥ जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे गुरुराज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांभलो, जीरे पर्व पर्यूषण आज ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे आश्रव भाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥ जीरे कल्पसूत्र घर लावीयें, जीरे अष्टाह्धर धरी

ध्यान ॥ जीरे ललित० ॥ २ ॥ जीरे दीपक अगर उखेवियें, जीरे रात्रि जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा विविध रचावीयें, जीरे त्रण दिवस इणि रीत ॥ जीरे ललित० ॥ ३ ॥ जीरे सुण सजनी रजनी गइ, जीरे कल्प धुरा परन्नात ॥ जीरे सहियर मली मंगल नणे, जीरे हय गय रथ मेलात ॥ जीरे ललित० ॥ ४ ॥ जीरे वरघोडे नली नातशुं, जीरे शुचि तनु पुस्तक हाथ ॥ जीरे इम मंमाणें आवीयब, जीरे जिहां श्रुत निधि गुरुनाथ ॥ जीरे ललित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुसन्मुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित पर्षदामांह ॥ जीरे इणि अवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नमत उत्साह ॥ जीरे ललित० ॥६॥ जीरे समकितवंती श्राविका, जीरे सहियर मली समदिठ ॥ जीरे अनुनव उज्ज्वल मोतीयें, जीरे स्वस्तिक लक्षण पीठ ॥ जीरे ललित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पूरी वधावती, जीरे बेसती बेसणठाय ॥ जीरे पंच कल्याणक देशना, जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे ललित० ॥ ८ ॥ जीरे छठ अठम तप जिन नमी, जीरे सांनलशे नर नारी ॥ जीरें श्री शुनवीरने शासने, जीरे करशे एक अवतार ॥ जीरे ललित०॥ ए ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी ॥ जगबंधव जगत्रात हो ॥ द्वारिकां नगरी समोसस्या ॥ सहि० ॥ बावीशमा जगतात हो ॥ ज्लट आणी एतो, लाज ने जाणी एतो, पुण्यनी खाणी, शुद्ध श्राविका ॥ ज वि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी नमी करी ॥ सहि०॥ बेगा बे कर जोडी हो ॥ अमृ तसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजले मनने खोडी हो ॥ ज्ल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध०॥ जवि० ॥ ॥ २ ॥ श्याम शरीरें शोजता ॥ सहि० ॥ तेज तणो नहिं पार हो ॥ ऊबक बनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥ विश्व मानस हितकार हो ॥ ज्ल० ॥ लाज० ॥ ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य राणी रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत जूषण अंग हो ॥ तप सुघाट घूंटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी सु शील सुचंग हो ॥ ज्ल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी कर ग्रही ॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम घोल हो ॥ मननिर्म ल जल जेलती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लसी मनरंग

रोल हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ५ ॥ समकित बाजोठ उपरें ॥ सहि० ॥ श्रद्धा स्वस्तिक जोर हो ॥ रुचि मुक्ताफल पूरती ॥ सहि० ॥ चूरती कर्म कठोर हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ६ ॥ नाण चिंतामणि स्थापती ॥ सहि० ॥ अनुजव कुसुम सुरंग हो ॥ विनयें करी वधावती ॥ सहि० ॥ ललती जेम सुरंग हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ७ ॥ सम्यगदृष्टि निरखती ॥ सहि० ॥ हरखती हृदय मकार हो ॥ क्षण क्षणमां जिनराजने ॥ सहि० ॥ तृप्ति न पामे लगार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ८ ॥ ड्व्यजावें करी गहूंअली ॥ सहि० ॥ रुक्मिणी राणी एम हो ॥ तेम करो तमें श्राविका ॥ सहि० ॥ कीर्त्ति पामो जेम हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ए ॥ इति ॥ ६२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेशठमी ॥

हारनो हीरो माहारो ॥ ए देशी ॥ अथवा साचनो ॥ शूरो नृप चंदजी, राजिंद माहारा जाग्यतणे बलिहारी हो ॥ ए देशी ॥ चउनाणी चोखे चित्तें, सहियर मो

री ॥ श्री सोहम गणधार हो ॥ आप स्वनावमां खे लता, सहियर मोरी ॥ धरता ध्यान उदार हो ॥ सह ज सोनगी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुनमति जागी गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो ॥ १ ॥ बारे नावना नावतां, सहियर मोरी ॥ अनि त्यादिक गुणगेह हो ॥ माहाव्रत पामीने वली ॥ स हि० ॥ नावे पणवीश तेह हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें करी ॥ सहि० ॥ सहस अढार जे थाय हो ॥ तेह ने शील कहीजियें ॥ सहि० ॥ ते पाले निर्माय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ३ ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे ॥ सहि० ॥ चरण करण गुण धाम हो ॥ पडिलेहण आवश्यकादिकें ॥ सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम पालतां ॥ सहि० ॥ वर्त्ते आतमनाव हो ॥ नयरी राज गृही आविया ॥ सहि० ॥ नवोदधि तारण नाव हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ॥ ५ ॥ नदंत सुणीने आवियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रे णिकराय हो ॥ साथें राणी चेलणा ॥ सहि० ॥ गहूं

ली करे गुण गाय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां कणे ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ नाव धरीने जे सुणे ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकार हो ॥ सहज सोनागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुन मति जागी गुरु वांदवा॥सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो ॥ ७ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

॥ जगजीवन जमुना रे, जल नरवा द्यो ॥ए देशी॥ ॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे गहूंअली तजी खेद रे ॥सुखकारणी॥ नाम स्थापना इव्यथी रे ॥ मनोहारणी ॥ नावे मंगल चिहुंनेद रे॥ सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीव ने मिश्रथी रे ॥ म० ॥ एतो नाम मंगल त्रिहु नाम रे ॥ सु० ॥ आपे मंगल ए सही रे ॥ म० ॥ कीजें नित नित शुन काम रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगमथकी रे ॥ म० ॥ एतो इव्यमां होय विचार रे ॥ सु० ॥ नावमांहे दोय एवली रे ॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म० ॥ सही नाव मंगल होय तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विघ्नतां

रें ॥ म० ॥ ए तो तेहनुं कारण तेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंग कह्यां ए भावनां रे ॥ म० ॥ एतो सद्दहियें शुभचित्त रे ॥ सु० ॥ द्रव्य मंगल मेली करो रे ॥ म० ॥ एतो गहूंअली जिनमत रीत रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ टाले जन्म मरणथकी रे ॥ म० ॥ कह्यो मंगल शब्द निरुत्त रे ॥ सु० ॥ अध्यवसाय ए आदरी रे ॥ म० ॥ भवि कीजें जन्म पवित्त रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ योग जेह जिनशासनें रे ॥ म० ॥ सवि अध्यातम संयुत्त रे ॥ सु० ॥ शिवफल दायक ते सही रे ॥ म० ॥ कहे राम सदागमरीत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ अथ गहूंअली पांशठमी ॥

॥ धवलशेठ लइ भेटणुं ॥ ए देशी ॥ आगम अमृत पीजियें, बहुश्रुतथी गुरु पासें रे ॥ श्रोता गुण अंगें करी, विनय करी उल्लासें रे ॥ आ० ॥ १ ॥ शुद्ध भाषक समता धरा, पंचम कालें थोडा रे ॥ दीसे बहु आडंबरी, जेहवा उद्धत घोडा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ वस्तुधर्मनी देशना, जे दीये हेत राखी रे ॥ कीजें तेहनी सेवना, उपकारी गुण दाखी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आगमतत्त्व प्रकाशमां, जे भवियण चित्त फूले रे, अनुभव रस आस्वादथी, शुणीयें जेह रसीले रे ॥ आ०

॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाणथी, साधुनो बंध सुरीतें रे ॥ तत्त्वातत्त्व विशेषणा, लहीयें परम प्रतीतें रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्त्वारथ श्रद्धान जे, समकित कहे जिनराया रे ॥ नासण रमण पणे लहे, नेद रहित मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक पूजन नावना, करता नक्ति रसाल रे ॥ पुण्य महोदय पामीयें, केवल ऋद्धि रसाला रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६५ ॥

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ प्रनुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दिल धरी, गाशुं तपगछ राया हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोहम घणधरु, पटधर जगत गवाया हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी वीर पटोधर वंदियें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सजनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ छत्रीश गुणशुं बिराजता, छे नवि जनना आधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स० ॥ तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग नाण हो ॥ अ० ॥. स० ॥ निरखतां गुरुराजनें, बूझे जाण अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मुखडुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयालां गुरुनेण हो

॥ अ० ॥ स० ॥ जलधरनी परें गाजता, करता नवि जन सेण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ स०॥ अंग उपांगनी देशना, वरसत अमृतधार हो ॥अ०॥ स०॥ श्रोता सर्वनां दील ठरे, संयमशुं धरे प्यार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ५ ॥ स० ॥ शुन शणगार सजी करी, मोतीयडे नरी थाल हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्रद्धा पीठनी उपरें, पूरें गहूंली विशाल हो ॥अ०॥ स० ॥ वी० ॥ ६ ॥ स० ॥ सौनाग्य उदयसूरि पाटना, धारक गुरु गुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री विजयलक्ष्मी सूरिंद जी, दीपविजय कविराज हो ॥ ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सडशठमी ॥

॥ रुडीने रढीयाली रे वाहाला तारी वांशली रे ए देशी॥

॥ सुकृत तरुनी वेल वधारवा रे, सींचती उपशम उदकनी धार, गुरुगुण हृदय धरंती प्यार, मानुं रंनानो अवतार ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण्य पनोती रे साथें साहेलीयो रे, मली मली शोन सजी शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार, कुंकुम घोली करी मनोहार ॥ सु० ॥ २ ॥ अक्षत सारा रे उज्ज्वलता नया रे, पूरती स्वस्तिक मंगल सार, चूरती चिहुं गति क्रोध

ज चार, ठवती श्रीफल हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥ अनुनव रंगें रे मोती वधावती रे, जलित परिणामें नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्ष न माय, सन्मुख बेसती बेसण ठाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ नोजन पामे रे अमृत नूखमां रे, नागर ग्रीषम पाम्यो गंग, जिन वाणी सुणवानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम नंग ॥ ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीशुनवीरनुं शासन पामीने रे, धरती हैयडे समकितवास, अनुक्रमें केवलज्ञान प्रकाश, मलती मुक्ति सहेली पास ॥सु०॥ ६ ॥ इति ॥६७॥

॥ अथ गहूंली अडशठमी ॥

॥ देशी उपरली गहूंलीनी ॥ गिरिवैनारें रे वीर समोसर्या रे, चौद सहस मुनिवर संघाय, त्रिगडे बेठा त्रिभुवनराय ॥१॥ रूडीने रढीयाली रे जिनजीनी देशना रे ॥ ए टेक ॥ वरसे जिम पुष्कर जलधार, सांनलवा बेठी परखदा बार ॥रूडी०॥२॥ निजनिज नाषायें समजे सहू रे ॥ जिम समजावी नीलें नार, योजन जिन वाणी उदार ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ नय गम नंग प्रमाण निक्षेपथी रे॥ जीवादिक नवतत्त्व विचार, उत्पाद व्यय ध्रुवथी धार ॥रूडी०॥४॥ दान शीयल तप नाव नेदें करी रे ॥ चउमुखथी चौ जिनवर वाण, निसुणी पा

मे पद निर्वाण ॥ रूडी० ॥ ५ ॥ पटराणी श्रेणिकनी चेलणा रे ॥ आदरथी उठे धरीने प्यार, लेइ (सहस) सहीयो संगें सार ॥ रूडी० ॥ ६ ॥ सोवन जवथी स्वस्तिक पूरती रे ॥ वांदी वधावे थइ उजमाल, लूब णडां लटके करे रसाल ॥ रूडी० ॥ ७ ॥ चतुरा उ सरती पाछे पगें रे, जोती जिनमुखचंद अमंद, पामे मनमां परमानंद ॥ रूडी० ॥ ८ ॥ जिनवचनामृत सांजले रंगथी रे ॥ जक्ति पूर्वक चित्त मजार, धरती धरथ सरूप विचार ॥ रूडी० ॥ ए ॥ इति ॥ ६८ ॥

॥ अथ गहूंली उगणोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे, गुणशील वनके मेदान ॥ विप्र पडिबोह्यो रे, केवलज्ञान प्रधान ॥ अरिहा तीन जगतके जाण, समवसरण तखतें महेराण, जनके नामंमल गुणखाण, श्रेणिक हरख्यो रे आयो वंदन काज, चतुरंगी फोजां रे वांकडीया करी साज, साथें तरुणी रे पंचसयाको समाज ॥ वी० ॥ १ ॥ धर्म प्रकाशे बारे परखदा मांहे, मजकुर पूछे गोयम उत्साहे, चउ अनुयोगें उत्तर सोहाय, श्रेणिक पूछे रे बेशी यथोचित गाय, वाणी निसुणी रे मनमां हर्षित थाय, संशय टाले रे आतमअनंत सुख थाय ॥ वी० ॥ २ ॥

बत्रीश बद्ध नाटक रची सार, करी नर नारी रूप रसाल, खलके कंकणना खलकार, प्रभुनें वंदे रे दर्दु रांक सुर सार, ज्ञातासूत्रें रे वरणवियो अधिकार, समकित संगें रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी० ॥३॥ चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगें अनेक शणगार सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकुम घोली रे साथीयो रंग रसाल, रयणें पूरी रे वधावे नरी था ल, नेह धरीने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥४॥ त्रिशला नंदन सूरिजन वंदो, अवसर लइ आ फंद निकंदो, पामे नित्य नवनवा आनंदो, बहु चिरंजीवो रे तीरथपति सुलतान, दिल नरी ध्याउ रे प्रभुगुण नुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसूरि गुण गाण ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ए ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रभुजी आव्या रे शहेर नरुअचके मेदान, अश्व प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण ॥ ए टेक ॥ फजरकें उगमते परनात, नृपति हरख्यो रे साख्यो अर्थीको काज, स्वामीजी वांद्या रे बहु फोजां के साज, नक्ति रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ उपदेश आपे त्रिभुवनजाण, सुणे परखदा बारे वाण, मन

मां जाणे कोइ सुजाण. नृप पूछे रे मुनि सुव्रत जि नराय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणे ठाय, देवें दीठो रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणसण लेइ प्रनुके पाय, पहोतो सुरलोकें दिल लाय, तीरथ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी आय, नावना नावे रे तजी विषय कषाय, डुःसम कालें रे ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटक नाचे नव नव रंग, करे अशुन करमनो नंग, साचो समकित गुणनो रंग, सूत्रें दीसे रे सूरियान सुरनो अधिकार, पूजा कीधी रे सतर नेद सुखकार, शंका टाले रे न विक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन महानाग, दाखे शिवगति पूरीनो माग, जगमांहे क हेवाये वीतराग, आवे रायो रे जिनशासन सुलतान, माग्या दीजें रे मनवंछित प्रनु दान, वांबा कीजें रे वि बुध विमल शुन ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ नवियण वंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति आपे रे टाले कुगति कुठाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशांतर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक

जाये लीधे नाम, जग पडिबोहे रे ए त्रिहुं लोक नो नाथ, मुनि परिवार रे चउद सहस छे संघात, सायर छोडी रे कोण सेवे छीलर पाथ ॥ नवियण० ॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यकै मेदान, आया पुंमरिक प्रधान, सुर तिहां रचे रे स मवसरण तेणि वार, इंद इंद्राणी रे वंदे प्रजुने अपार, आनंद पावे रे देखी प्रजुनो देदार ॥ नवि० ॥ ॥ २ ॥ वननो पालक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त थीयो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रें साथें रमणी समाज, तिहांथी चाल्यो रे प्रजुने वं दन काज ॥ नवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेना सजीय उ दार, गज रथ पायक अमुल तुखार, बहु जव उतर वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रजुजीना पाय, प्रजुपद वंदी रे बेठो यथोचित ठाय, तव उपदेसे रे वीर जिनेसर राय ॥ नवि० ॥ ४ ॥ चेलणा राणी अति सोजागी, जिन वंदिने जक्ति जागी, गहूंली करवा रढ बहु लागी, कनक चोखा लइ रे हाथे अतिही रसाल. गहूंली पूरे रे, जगपति आगें विशाल, मोतीडे वधावे रे, टाले पाप प्रजाल ॥ नवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधा

श्रीजगवंत, संशय टाळ्या श्री अरिहंत, श्रेणिक वंदी पुर पहोचंत, एम बहुजावें रे नित्य नित्य मंगल गाय, सुकृत कमावे रे दीपविजय कविराय ॥ जवि० ॥ ६ ॥इति॥

॥ अथ गहूंली बहोंतेरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ केशरचंदन जरीय कुंकावटी, सोवनथाल ले कामिनी॥ गहूंअली करीने मंगल गाई, बलिहारी गुरुनामनी ॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोल शणगार सजीनें सुंदर, जाणे झबूके दामिनी ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जरी रे सजामां जामिनी ॥ गहूंली० ॥ २ ॥ नवखंमी नवरंगी निरुपम, विधविधरंग ब नावनी ॥ मोतीयें साथीया पूरे मनोहर, जक्ति करे शुज जावनी ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग जन पावन, देशना श्रीगुरुरायनी॥ धवल मंगल गां धर्वगुण गानें, सांजले सहु सुखदायिनी॥ ग०॥ ४ ॥ उदयतन वाचक उपदेशें, रूडी सजा रसरागनी ॥ प्रीछे ते परमारथ पामे, वाणी श्रीवीतरागनी ॥ग०॥५॥

॥ अथ गहूंली त्र्होंतेरमी ॥

॥ सजनी मोरी गुणशीलवनके मेदान रे, सजनी मोरी आव्या श्रीवर्द्धमान रे ॥ स० ॥ ज्ञानादिक गुणदरी

या रे ॥ स० ॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥स० ॥१ ॥
॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यो आवे रें
॥ स० ॥ समकित क्षायिक नावें रे ॥ स० ॥ कंचन
वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स०
॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन नांखे रे ॥ स० ॥ न
वपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आतम जा
णो रे ॥ स० ॥ आतम नव पद वखाणो रे ॥ स०
॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्त्व नूषण सार रे ॥ स० ॥ रत्न
रकेबी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूल रें
॥ स० ॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥स०॥
क्रिया कुंकावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने
पाथ रे ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥
मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥
आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेलणा गहूंली
बनावे रे ॥ स० ॥ एणी परें गहूंली कीजें रे ॥ स०॥
॥ नरनव लाहो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥
विषय ते विष सम जाणो रे ॥ स० ॥ बोले त्रण्य
नुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरे चालो रे
॥ स० ॥ सुनवमांहे माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥
॥ स० ॥ मणि उद्योत गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज

मनोरथ फलिया रे ॥ स० ॥ शुं कहीयें वारो वार रे ॥ स० ॥ ते कां करो परिहार रे ॥स०॥८ ॥इति॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥

हांरे म्हारे गाम धर्मना साडा पच्चवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ ॥ हांरे माहारे जिनआणा लेइ इंद्रभूति गण धार जो, विचरे रे चउविह अप्रतिबंध विहारथी रे लो ॥ हांरे म्हारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार जो, चउज्ञानी शुभध्यानी धर्मना सारथी रे लो ॥ ॥ १ ॥ हांरे म्हारे राजगृही उद्यानें आव्या नाथ जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण भावशुं रे लो ॥ हांरे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो, अंग नमावी वंदे गणधर पावने रे लो ॥ २ ॥ हांरे म्हारे भवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो, भांखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे लो ॥ हांरे मारे सेवो भविजन सिद्धचक्र शुभ लेश जो, बहुसुख पाम्यां मयणा तेहना संगथी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे अवसर पामी मगधाधिपनी नार जो, उल्लसी रे मन हर्षी स्वस्तिक पूरवा रे लो ॥ हांरे मारे सहियर मंगल गाती गीत अपार जो, मानुं भव भव संकटने ए चूरवा रे लो ॥ ४ ॥ हांरे मारे इणी

विध स्वस्तिक पूरे श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते मंगल
माला माननी रे लो ॥ हांरे मारे शिवपद कारण
नावें जोग उक्किठ जो, दीप कहे एम ए छे वात नि
दाननी रे लो ॥ ५ ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचोतेरमी ॥

धोलनी देशीमां ॥ राजगृही उद्यानमां, श्रीसोहम ग
णधार ॥ समोसरिया परिवारशुं, मुनिजनना आधा
र ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा ॥ ए आंकणी ॥
पंच महाव्रत पालता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्त
र नेदें संयम वखा, वैय्यावच्च दश धार ॥ चा० ॥ २ ॥
गुप्ति धरे नववाडशुं, ज्ञानादिक तप बार ॥ निग्रह
क्रोध तणो करे, चरणसित्तरि शणगार ॥ चा० ॥ ३ ॥
पिंमविशुद्धि समिति धरे, नावना पडिमा बार ॥ इं
द्रियरोधक पडिलेहणा, गुप्ति अन्निग्रहधार ॥ चा०
॥ ४ ॥ करणसित्तरी ए पालवे, टाले सकल कलेश ॥
कमलासनने बेसी कहे, नविजनने उपदेश ॥ चा०
॥ ५ ॥ श्रेणिक नृपति मानशुं, प्रणमी पट्टोधर राय ॥
उचित अवग्रह ते साचवे, धर्म सुणे सुखदाय ॥ चा०
॥ ६ ॥ गुणवंती करे गहूंअली, चतुरा चेलणानार ॥
माणक मोती वधावती, नरती सुकृत नंमार ॥ चा०

॥७॥ कोकिल कंठें कामिनी, सोहासणी निर्मल वृंद ॥
गुरुगुण अमृत गावती, पामति परमानंद॥चा०॥८॥

॥ अथ श्रीजंबुगुरुनी गहूंली ठहोंतेरमी ॥

॥ अजब कियो रे मुनिराय, लघुवयें जोग लियो रे ॥
शोल वरस संयम लियो रे, तरुणी आठ विछोड ॥मु
निवर योग लियो रे ॥ कोडि नवाणुं सोवन तणी रे,
छोडी मनने कोड ॥ मु० ॥ १ ॥ तप द्वादश भेदें करे
रे, भावता भावना बार ॥मु०॥ पडिमा बारना उद्यमी
रे, गुण छत्रीशना आधार ॥ मु० ॥२॥ पडिरूवादिक
चउदे भला रे, निमित्त अठंग सुगाय ॥मु०॥ निपुण ते
गुणगणंग तणा रे, गुणसागर गुरुराय ॥ मु० ॥ ३ ॥
सुनि मंमलशुं परवस्या रे, जंबू जुग प्रधान ॥ मु० ॥
विचरंता पाउ धारिया रे, राजगृही उद्यान ॥ मु० ॥
॥ ४ ॥ कोणिक नरपति वांदवा रे, साथें लइ परिवा
र ॥ मु० ॥ पद्मावती करे गहूंअली रे, इव्य प्रधान
विचार ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउ गति चूरण साथियो
रे, श्रद्धा पीठ बनाय ॥ मु० ॥ वसन आभूषण व्रत
तणां रे, शिवफल श्रीफल ठाय ॥ मु० ॥ ६ ॥
उत्तम गुरु गुणभक्तिथी रे, वधावे गुरुराज ॥ मु० ॥
गुरुमुखपद्मनी देशना रे, सुणि पामे शिवराज ॥मु०॥

॥ अथ गहूंली सत्त्योतेरमी ॥

॥ वाले म्हारे मारगडो रुंध्यो रे रतिणा हाथ, तेनी मुने जापटु लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जग उपकारी रे वीरजिणंद, मगधें विचरता आवे रे ॥ साथें सुर नरना लइ वृंद, गिरिवैन्नारें सुहावे रे ॥ १ ॥ गोयम सोहम जास वजीर, मुनिगण सुपद सेवता रे ॥ अनिग्रह धारी रे केइ मुनि धीर, रविशुं दृष्टि लगावता रे ॥ २ ॥ आवे जुवनाधिपना वीश, बत्रीश व्यंतरना राजा रे ॥ मलिया वैमानिकना ईश, दश शशी रवि तेजें ताजा रे ॥ ३ ॥ इणि परें चारे जातना देव, कोडाकोडि मली घणा रे ॥ करता सम वसरण ततखेव, निज निज कृत्यनी नहिं मणा रे ॥ ४ ॥ त्रिगडे बेसी त्रिजुवन तात, धर्म कहे करुणा आणी रे ॥ जेहवी सत्तागतनिज जात, आत्मतत्त्व लहे प्राणी रे ॥ ५ ॥ नरपति श्रेणिकनी घरनार, चंद्रमुखी चेलणा राणी रे ॥ करती स्वस्तिक मंगल सार, निज गुरु आगल गुण खाणी रे ॥ ६ ॥ प्रजुनें माणक मोती वधाव, विच विच पद प्रणमे तिहां रे ॥ अंतर आतमजाव जगावे, पुण्यजंमार नरे जिहां रे ॥ ७ ॥ सोहव गावे रे मधुरां गीत, गहूंली

जाव उमंगशुं रे ॥ साची वाणी करी ए रीत, अमृत वाणी रंगशुं रे ॥ ८ ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ गहूंली अठ्ठोतेरमी ॥

॥ आवी हुं देवा उलंनडो सासुजी ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु पद पंकज नमी, सामणीजी ॥ गाशुं गुरु गुणमाल रे ॥ सद्गुरु विचरंता वंदीयें ॥ सामणीजी ॥ १ ॥ द्वादश अंग सिद्धांतना ॥ सा० ॥ पारग धारक एह रे ॥ स० ॥ गुरु गुण छत्रीशें अलंकर्या ॥ सा० ॥ चरणकरण नंमार रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ नव्य जीवने प्रतिबोधता ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुणधाम रे ॥ स० ॥ गहूंअली करो गुरु आगलें ॥ सा० ॥ हर्ष धरी मन चंग रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ समकेत कुंकुम तिण समे ॥ सा० ॥ समता निर्मल नीर रे ॥ स० ॥ थाल नर्यो शुन नावनो ॥ सा० ॥ चोखा अखंम परिणाम रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मंगल साथीयो तिहां बन्यो ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुण पीठ रे ॥ स० ॥ जिनशासन सिंहासणे ॥ सा० ॥ बेसी करे उपदेश रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पुहवी मंमल विहरता ॥ सा० ॥ तारण तरण जहाज रे ॥ स० ॥ श्रीकल्याणसागरसूरि जे नमे

॥ सा० ॥ देखी सकल गुणखाण रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ६ ॥ विशाल सागर कहे वंदीयें ॥ सा० ॥ एह वा मुनि नित्यमेव रे ॥ स० ॥ आतम मंगल अनु जवे ॥ सा० ॥ तेहिज नित्य नित्यमेव रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ए ॥

॥ अथ गहूंली उंगण्याएंशीमी ॥

॥ हस्तियाम वन खंमभजार, राजगृही नालिंदा बार, आव्या इंद्रजूति गणधार तो ॥ गौतम गुरु वंदवा ज इयें ॥ वंदना करीयें ने शिवसुख वरीयें तो ॥ गौतम गुरु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उदक पेढाल मुनीसर दोय, पार्श्वनाथ संतानीया सोय, पूछे प्रश्न ए णी परें जोय तो ॥ गौ० ॥ २ ॥ श्रावकने अणुव्रत उच्चरावे, मुनिवर देशथी विरति करावे, स्थावर अनु मति मुनिने आवे तो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ कहे गौतम सुणो मुनिवर वात, शेठपुत्र षटनो दृष्टांत, नृप अ न्यायथी मारण जात तो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ तास पिता करे विनति राय, ब कुलनो उछेद ते थाय, पंच पुत्रने मूको ताय तो ॥ गौ० ॥ ५ ॥ इम विनति करता तस आपें, पुत्र एक तस हर्ष ते व्यापे ॥ मार णनी नहिं अनुमति आपे तो ॥ गौ० ॥ ६ ॥ राय

प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली लावे॥ उत्तम गुरुपद पद्म वधावे तो ॥ गौं० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी ॥ झुमखडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोभता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कूरवी संबल साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहिं ममता सम ताधरा, शांत सुदंत महंत ॥ सु० ॥ षटपद वृत्ति आ हारता, देश काल मतिमंत ॥सु०॥२॥ पंच महाव्रत भावना, भावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणविश चित्त न धारता, अशुभ भावन निश दीस ॥सु०॥३॥ शिवना री रंजन भणी, पहेर्यो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते आगल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥ ॥४॥ क्रोधादिक चउ जींतवा, वरवा चार अनंत ॥ सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सद्गुरु चरण नमंत ॥ सु० ॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअली, धरती हर्ष अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीर वचन सुणी, पामे पद महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८० ॥

॥ अथ गहूंली एकाशीमी ॥

॥ अने हांरे सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना पाय ॥ अलिय विघन सवी टले रे, मागुं एक पसा

य ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा रे ॥ अने हांरे राजगृही रलीयामणी रे, तिहां श्रेणिक राजा अमंद ॥ समकित शुद्ध ते सद्दहे रे, अविदारे सवि फंद ॥ चा० ॥ २ ॥ अ० ॥ वीर प्रभु तिहां आवीया रे, तेह नयरी उद्यान ॥ वनपालकें दीधी वधामणी रे, हरख्यो देइ तस दान ॥ चा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ लाख दान देइ करी रे, राजा श्रेणिक आय ॥ चार निकायना देवता रे, वंदे प्रभुना पाय ॥ चा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करी रे, बेठा इंद नरिंद ॥ वीर वाणी तिहां सांभली रे, मनमां हुउ आनंद ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ अ० ॥ भविजनने पडिबोहता रे, जस आतम उद्धार ॥ पाप चक्र सवि चूरता रे, पामे सुरगति सार ॥ चा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ चेलणा करे तिहां गहूंअली रे, सोवन भरी ने थाल ॥ प्रभुने मोतीडे वधावती रे, मुख जोती सुविशाल ॥ चा० ॥ ७ ॥ ॥ अ० ॥ धर्मलाभ तिहां उच्चरे रे, वरसता अमृत वाण ॥ जे भवि भावें ते सांभलें रे, तस घर कोडि कल्याण ॥ चा० ॥ ८ ॥ अ० ॥ समवसरण बिराजता रे, नवकमलें ठवता पाय ॥ इम अनेक गुणे शोभता रे, चंद्रमुनि गुण गाय ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति ॥ ८१ ॥

॥ अथ गहूंली बाशीमी ॥

॥ सही चालो श्री महावीरने, नमवा जइयें रे ॥गणी गौतम स्वामी वजीर, बेनी तिहां जइयें ॥सही०॥ १ ॥ त्रिगडानी रचना करी सारी, त्रिदशपति अति नारी रे॥ मध्यपीठ उपर अती तगारी, बेग वीरजी तारी ॥ बे० ॥ सही०॥ २ ॥ चौद सहस मुनिशुं परवरिया, गुणशील वन उतरीया रे ॥ अनंत अनंत गुणें करी नरिया, समता रसना दरिया ॥ बे० ॥ सही० ॥ ॥ ३ ॥ श्रेणिक स्वामी समागत जाणी, साथें चेलणा राणी रे ॥ लेती समकित लाभ कमाणी, वंध्या उलट आणी ॥ बे०॥ सही० ॥ ४ ॥ बाल कुमरी शुभराज समाजें, जलधरनी परें गाजे रे ॥ आतपत्र प्रभु शिरपर राजे, नामंमल ठवि ठाजे ॥ बेनी०॥ सही० ॥ ५ ॥ एम निसुणी चाली ते बाला, ठोडी सहु जंजाला रे ॥ गति चालती जिम गजबाला, शुणवा जिनगुणमाला ॥ बेनी० ॥ सही० ॥ ६ ॥ तिहां आवी प्रभुमुद्रा परखी, बेठी अवसर निरखी रे ॥ गहूंली पूरे अति मन हरखी, सहीयर सरखा सरखी ॥ बे० ॥ सही० ॥ ७ ॥ चरण ठवी मुक्ताशुं वधावे, हरख अति दिल लावे रे ॥ बहु बाला मली

गहूंली गावे, सखे कंठ मिलावे ॥ बे० ॥ सहि० ॥
॥ ८ ॥ अंग उपांग सुणी जिन पासें, धारी अति उ
ल्लासें रे ॥ दीप कहे प्रभुध्यान विलासें, पहोती निज
आवासें ॥ बे० ॥ सही०॥ ए ॥ इति ॥८१॥

॥ अथ अध्यातम गहूंली त्र्याशीमी ॥

॥ नवि तुमें वंदो रे शंखेश्वर जिन राया ॥ ए देशी॥
॥ अमृत सरखी रे सुणीयें वीरनी वाणी, अति म
न हरखी रे प्रणमो केवल नाणी ॥ ए आंकणी छे॥
योजनगामिनी प्रभुनी वाणी, पांत्रीश गुणथी नांखे॥
पूरव पुण्य अपूरव जेहनां, प्रभुवाणी रस चाखे ॥
अमृत सरखी० ॥ १ ॥ जेहमां द्रव्य पदारथ रचना,
धर्माधर्म आकाश ॥ पुजल काल अने वलि चेतन,
नित्यानित्य प्रकाश ॥ अमृत० ॥ २ ॥ द्रव्य गुण नें
पर्याय प्रकाशे, अस्ति नास्ति विचार ॥ नय सातेथी
मालकोशमां, वरसे छे जलधार ॥ अमृत० ॥ ३ ॥
गुणसामान्य विशेष विशेषें, होय मलि गुण एकवी
श ॥ तस चउ भंगी चार निक्षेपे, भांखे श्रीजगदी
श ॥ अमृत० ॥ ४ ॥ निजदृष्टांतें खेचर भूचर, सु
रपति नरपति नारी ॥ निज निज भाषायें सहु सम
जे, वाणीनी बलिहारी ॥ अमृत० ॥ ५ ॥ नंदी व

र्द्रननी पटराणी, चउ मंगल प्रभु आगें ॥ पूरे स्व स्तिक मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति पागें ॥अमृत०॥ ॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रभुवाणी रस पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रभुता प्रगटे, प्रभुने प्रभुता दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥ ८२ ॥

॥ अथ जंबुकुमारनी गहूंली चोराशीमी ॥

॥ घरुडामें सहियो फूले हाथणी ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही नयरी समोसस्था, पांचशें मुनि परिवार ॥ मोरी सहियां हो ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, श्री श्री सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चालो पट्टोधर गुरु वां दवा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जंबुकुमर आवे हेजशुं, पूज्यजीने वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मचारी शिर सेहरो, लेवा मुक्तिगढ राज ॥ मोरी० ॥ चालो० ॥ ॥ २ ॥ गुरुमुखथी रे सुणी देशना, संयमें उल्लसित नाव ॥ मो० ॥ क्षायिक समकेतनो धणी, तरवाने नवजल दाव ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ अणुव्रत लेइ गुरु आगलें, संयमनो रे उजमाल ॥ मो० ॥ परणी ने घरणी आठने, बूफवी वयण रसाल ॥ मो० ॥ ॥ चा० ॥ ४ ॥ संयम लीये मुनि पांचशें, सत्तावीश परिवार ॥ मो० ॥ चरण करण गुण आगला, जेह

ना छे धन्य अवतार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ५ ॥ सुध
र्मा स्वामीना पाटवी, केवल लही गछराय ॥ मो० ॥
गुणशीला चैत्य पधारिया, उदायिन हर्ष न माय ॥
॥ मो० ॥ चा० ॥६॥ पटराणी राणी पूरे गहूंअली,
करवा सफल अवतार ॥ मो० ॥ दीपविजय कविरा
जने, प्रणमे छे बहु नर नार ॥मो०॥चा०॥७॥इति॥८४

॥ अथ फूलडां पंच्याशीमां ॥

॥ सखी रे में कौतुक दीठुं, साधु सरोवर झीलता
रे ॥ सखी नाकें रूप निहालतां रे ॥ सखी लोचनथी
रस जाणतां रे ॥ सखी मुनिवर नारीशुं रमे रे ॥१॥
सखी नारी हींचोले कंतने रे ॥ सखी कंत घणा एक
नारीने रे ॥ सखी सदा यौवन नारी ते रहे रे, सखी
वेश्या विलुब्धा केवली रे ॥ २ ॥ सखी आंख विना
देखे घणुं रे ॥ सखी रथ बेग मुनिवर चले रे ॥ स
खी हाथ जलें हाथी डूबीयो रे ॥ सखी कुतरीयें के
शरी हण्यो रे ॥ ३ ॥ सखी तरशो पाणी नवि पीये
रे ॥ सखी पग विहूणो मारग चले रे ॥ सखी नारी न
पुंसक भोगवे रे ॥ सखी अंबाडी खर उपरें रे ॥ ४ ॥
सखी नर एक नित्य उभो रहे रे ॥ सखी बेठो नथी
नवि बेसशे रे ॥ सखी अर्ध गगनवच्चें ते रहे रे ॥

सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी चंदरे मेरु हलावियो रे ॥ सखी सूर्य अजवालुं नवि करे रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शोकें घडी नहीं बेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस में देखीयो रे ॥ सखी काट वल्यो कंचनगिरि रे ॥ सखी अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे ॥ सखी तोहे प्रभु न संभारीया रे ॥ ७ ॥ सखी वयरसामी सुता पारणें रे ॥ सखी श्राविका गावे हालरां रे ॥ सखी महोटा थइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीशुभवीरने वाहला लडा रे ॥ ८ ॥ इति हरियालीनी गहूंली ॥ ८५ ॥

॥ अथ चूनडी छयाशीमी ॥

॥ हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पेंजण पाप अढार ॥ हांजी सूत्र नलुं रे सिद्धांतनुं, हांजी टालो आठ प्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥ १ ॥ हांजी त्रण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय नरी नव वाड ॥ हांजी वाणो वाणो रे विवेकनो, हांजी खेमा खुंटीय खाय ॥ हांजी शी० ॥ २ ॥ हांजी मूल उत्तर गुण घूघरा, हांजी छेडा वणो ने चार ॥ हांजी चारित्र चंदो वच्चे धरो, हांजी हंसक मोर चकोर ॥ हांजी शी० ॥ ३ ॥ हांजी अजब बिराजे

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूल्य ॥ हांजी लाखें पण लाभे नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥ हांजी शी० ॥ ४ ॥ हांजी पहेली ढंढी श्री नेम जी, हांजी बीजी राजुल नेट ॥ हांजी त्रीजी गजसुकुमालजी, हांजी चोथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शी० ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबू स्वामीने, हांजी छठी धनो अणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शी० ॥ ६ ॥ हांजी सीता कुंता द्रौपदी, हांजी दमयंती चंदनबाल ॥ हांजी अंजना ने पद्मावती, हांजी शीयलवती अतिसार ॥ हांजी शी० ॥ ७ ॥ हांजी अजब बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी मेघ मुनीसर एम भणे, हांजी शीयल पालो नर नार ॥ हांजी शी० ॥ ८ ॥ इति ॥ ८६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्त्याशीमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सहियरोजी साधुजी वंदीयें, श्रीवीरतणा पट्टोधार रे ॥ चउनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रयण तणा भंडार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ एकविध असंयम टालता, धर्म दोय यति गृही गमता रे ॥ ति

विध गारवने परिहरे, चार सुख शय्या मांहे रमता रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ प्रमाद तजे नजे व्रतीने, नय टाले मातनें पाले रे ॥ नियाणां न करे साधु जी, दश श्रमण धरम अजुवाले रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ ॥श्रद्धावंती शुद्ध श्राविका, गुरु आगल नक्ति करंती रे ॥ गुरु आगल पूरे गहूंअली, शासन करती बहु उन्नति रे ॥ ॥ चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुनवरस नरी, गुरु उत्तम रत्नना मुखथी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा, सुख अनुनवमां रहे एथी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥७७

॥ अथ तपनी नाष्य अठ्याशीमी ॥

॥ साहेबा महारा अरज करुं हुं कंत, कहे सुणो कामिनी जी ॥ साहिबा महारा गुरुउपदेशें हुं, सहियां मांहे रूपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आज्ञा आपो, मास खमण तप आदरुं जी ॥सा०॥ अवसर पामी, मानव नव सफलो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी माहारी हाथ न चाले, मन नवि चाले माहरुं जी ॥ गोरी महारी ए तप महोटुं, शरीर खमे नहिं ताहेरुं जी ॥३॥ ॥ सा० ॥ त्योने आदरुं, संवत्सरीना खोला पाथरुं जी ॥ सा० ॥ मान मागुं हुं, अंतराय तमें कां करो जी ॥ ४ ॥ गोरी अमें आज्ञा आपी, पच्चरकाण जइ

उच्चरो जी ॥ ससरा मह्हारा ढोल वजडावो, धर्मस्था नक धन वावरो जी ॥ ५ ॥ सासु मह्हारी साथें आ वो, चोक पूरावो गहूंली साथीये जी ॥ सहीयर म ह्हारी साथें आवो, गुरुजी वधावो गजमोतीयें जी ॥ ६ ॥ गुरुजी मह्हारा पच्चरकाण करावो, मास खम णनुं मन रूली जी ॥ जेठजी मह्हारा वाजां वजडा वो, खेला नचावो खांतशुं जी ॥ ७ ॥ वीरा मह्हारा घाट घडावो, पाट धरावो शेरीयें जी॥ सामणी मह्हारी, सांगी देवरावो वाजित्र नूंगल नेरीयें जी ॥८॥ सामणी मह्हारी आंगी रचावो, गुरुजी मनावो पाय लागीने जी ॥ सामणी मोरी पासें रहीने पोथी पूजावो,वास नखावो मागीने जी॥९॥ नवियां एहवी नावना नावो, तपें काया निर्मल करो जी ॥ तपीने मह्हारी वंदना हो जो, उदयरत्न एम उच्चरे जी ॥ १० ॥ इति ॥ ८८ ॥

॥ अथ नव पदनी गहूंली नेव्याशीमी ॥

॥ आतमराम मुनिराजीया, नवजल तारण नाव ॥ मोरी सहीयो रे ॥ पांचे योगने साधवा, लीधो ते मुनिवरनाथ ॥ मोरी० ॥ चालोने गीतारथ गुरुने वां दवा ॥ १ ॥ वृत्ति कहे योग पांचमो, साधन करे ए विलास ॥ मोरी० ॥ अनुनव अन्यासी सदा, व

ता ज्ञान अभ्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहेलो अध्यातमयोग जे, भावनायोग तेम जाण ॥ मो० ॥ ध्यानयोगें त्रीजो सही, समता योग मन होय ॥ ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ एम अनेक गुणें शोभता, वीर आणा लेइ मान ॥ मो० ॥ गोयमस्वामी समोसऱ्या, राजगृही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ श्रेणिकराय आवे वांदवा, सुणी आगमन उदंत ॥ मो० ॥ क्षायिक समकितनो धणी, वांदे गुरु गुणवंत॥मो०॥चा०॥ ॥ ५ ॥ इण अवसर राणी चेलणा, भाव सजी शणगार ॥ मो० ॥ श्रद्धापीठ उपर सही, गहूंली करे मनोहार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ तव गोयम दिये देशना, सेवो भविक सिद्ध चक्र ॥ मो० ॥ आंबिल उली आराधियें, जिम न पडो भवचक्र ॥ मो० ॥ चा० ॥ ॥ ७ ॥ पांचे धर्मीने चार धर्म छे, धर्मी सेव्या धर्म होय ॥ मोरी० ॥ मयणा ने श्रीपालनो,संबंध कहे सवि सोय ॥ मोरी० ॥ चा० ॥ ८ ॥वली नवपदमय छे आतमा, आतम नवपद जोय ॥ मो० ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकथी, भेद लहो नवि कोय ॥मो० ॥ चा० ॥ ए ॥ आतमधर्मीने देशना, धारजो हृदय मझार ॥ मो० ॥ खिमाविजय जस संपदा, शुभवि

जय सुखकार ॥ मो० ॥ चा० ॥ १० ॥ ७९ ॥

॥ अथ गहूंली नेवुंमी ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर चतुर चकोरडी, गुण उरडी हो थइने उज माल ॥ आवो गुरुने नेटवा, दुःख मेटवा हो सुणी धर्म रसाल ॥ बलिहारी गुणवंतनी ॥१॥ ऋजुमति हो होय कोडि कल्याण ॥ब०॥ए आंकणी ॥ नावठ नांजे नव तणी, वलि वाजे हो घरे जीत निशाण ॥बलि०॥ ॥ २ ॥ वलि आतमतत्त्वनी सेवना, शुन देशना हो सुणतां जे रीझ ॥ तेहिज तत्त्व प्राप्ति तणुं, प्रनु नांख्युं हो आगममां बीज ॥ बलि० ॥ ३ ॥ नमना निगमन वंदनें, गुरु विनयें हो होय लान अपार ॥ समकित शुद्ध ग्रही सही, ते वेहेलो हो लहे नवजल पार ॥ बलि० ॥ ४ ॥ स्वस्तिक कारण स्वस्तियुं, गुरु आगल हो रचियें मनरंग ॥ कुंकुमरोल कचोलडां, धरि उपर हो श्रीफल शुन चंग ॥ बलि० ॥ ५ ॥ द्रव्य मंगलथी नावियें, नावमंगल हो दानादिक चोक ॥ उपर साकर संपदा, सहि पामे हो शुनदृष्टि लोक ॥ बलि० ॥ ६ ॥ चोक पूर्यो गति चारनो, क

फेरा हो जवमांहि अनंत ॥ आतमराम सुगुरु हवे, मुज दीजें हो सहि सुख अनंत ॥ बलि० ॥७॥इति॥

॥ अथ गहूंली एकाणुंमी ॥

॥ रूडीने रढियाली रे समकित श्राविका रे ॥ सज करि शोल जला शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रूडी मांहे कुंकावटी रे ॥ कुंकुम थाल जयो करि श्रीकार, निरखवा चाली गुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली रे साथें मली संचरी रे ॥ जई गुरु केरा वंदे पाय ॥ गहूंली करे शुज चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३ ॥ मंगल करती रे निज आतम जणी रे ॥ वलि जलो कंकण नो करे रणकार ॥ थाय रूडो फांफरनो फमकार ॥ रूडीने० ॥ ४ ॥ लूहणां करती रे गुरुगुण हेजशुं रे ॥ श्रीफल ववती करे रंगरोल ॥ जाणती नथी कोइ गुरुने तोल ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगल करती हियडे हेजशुं रे ॥ वलि सुणी आगमनो समुदाय ॥ जवजल सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी रे श्रवणें चेतना रे ॥ सांजली हैयडे हरख न माय॥ ॰म कहे जिम अमिय समाय॥ रूडीने० ॥७॥ए१॥

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली बाणुंमी ॥
॥ फतमलनी देशी छे ॥

॥ चित्तहर ॥ चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसंबी समो
सस्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चउद हजारें
परवस्या ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परर्षदा बार, रतन
गढें आवी रह्या ॥ चि० ॥ बेग सिंहासन नाथ, चा
मर छत्र अलंकस्या ॥ २ ॥ चि० ॥ वंदे उदायन नृप,
रूप चार दर्शन दिये ॥ चि० ॥ समकिती व्रतधर
लोक, कोक कमलपरें विकसियें ॥ ३ ॥ चि० ॥ रंजा
अप्सरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥चि०॥ रूपें
जयंती समान, नामें जयंती माहासती ॥ ४ ॥ चि०
॥ वीर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमालिका
॥ चि० ॥ नक्ति सोवन रसी देह, जेह हजूरी श्रा
विका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नष्टाद लोजाइ साथ, नाथ
आगल ऊनी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूछे कर जोडी,
प्रनुजी उत्तर देता सही॥ ६ ॥चि० ॥ जागता उंघता
कोण, उद्यमी आलसु कोण नला ॥ चि० ॥ धर्मी
अधर्मी लोक, शतक बारमे नगवइ वरा ॥ ७ ॥
चि० ॥ सुणी हरखित कहे देव, महेर नजर महो
तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविख्यात, जो प्रनु पो

नी गणी ॥ ८ ॥ चि० ॥ विचरो देश विदेश, पण मुज हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्री शुनवीरजिणंद, बेह न देशो मुज कदा ॥ ए ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ गहूंली त्राणुंमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेली रे, गुरु गुण गावा टेव पडी ॥ नहिं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखी यो मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ ए केक थकी अधिकेरी रे, गुरुगुण गाती हर्ष धरी ॥ सु० ॥ २ ॥ नव अनंता नमतां रे, पुण्य संयोगें योग मल्यो ॥ जिनवाणी अति मीठी रे, सुरतरु महारे आज फल्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसारसमुद्रने तरवा रे, जोने एहिज जाहज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी रे, नविजनने हृदयें अतिय गमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ योग्य जीवने हितकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे खाणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ रत्नत्रयनुं कारण रे, तारण नव्यने एह सही ॥ सरस सुधारस जेहवी रे, देवेंद्रसूरियें एह कही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रनु मुखबिटथी खरती रे, गणधर लीये चित्त धरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

गम नंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रवचन कुसमे गुंथी रे, मुनिवर राजने कंठ ठवी ॥ देवेंद्र सूरि एम नांखे रे, नविजन प्राणी ए खेत नणी ॥ सु० ॥ ८ ॥ स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मुख जोती सुविशाला ॥ प्रेमेथी नविजन नावो रे, अमर लहे वर शिव बाला ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ ९३ ॥

॥ अथ रूपैयानी गहूंली चोराणुंमी ॥ धोलनी देशीमां ॥

॥ देश मूलकने रे परगणां, हाकम हुकम करंत ॥ ठडिदार चोपदार ऊनला, ए सहु महोटा नाइ धरंत ॥ रूपैयानी शोना रे शी कहुं ॥ १ ॥ कसबी ठोगाली पालखी, रथ धरी घूघरमाल ॥ सेवक हींफे रे मलपता, धनपाल घोडीनी चाल ॥ रूपैया० ॥ २ ॥ ऊंचा ऊंचा मंदिर मालियां, खाजलीयाला ठे गोंख ॥ कोरणीयाला ठे गोख ॥ रू० ॥ ३ ॥ आवो बेसो रे सहु करे, वली दीये आदर मान ॥ तोये पण बेसे नहीं, नहीं सांनले देइ कान ॥ रू० ॥ ४ ॥ निर्धन आवे रे ढूकडो, न दीये आदर मान ॥ महोढुं मरडी नीचुं जूए, पग मेलवानुं नहिं ठाम ॥ रूपैया० ॥ ५ ॥ ग्रंथ विनानो रे गांगलो, गरथें गांगा रे शेठ ॥ गरथविनान रे शेठीया, दीसे करता रे वेठ ॥ रू० ॥ ६ ॥ वि

वाजमें कजला, संपत्ति नाम धराय ॥ जगमां कहे
वाया रे कजला, ए सहु महोटा नाइ पसाय ॥ रू०
॥ ७ ॥ संग्राम शोनी रे वावरे, महोरो बत्रीश हजा
र ॥ वस्तुपाल तेजपाल कजला, ए सहु जगत मका
र ॥ रू० ॥ ८ ॥ दीपविजय कविराजने, होजो मंग
ल माल ॥ जगमां कहेवाया रे कजला, कोरडीया
लाने मान, फूदडीयालाने मान ॥ रू० ॥ ए ॥ ए४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचाणुंमी ॥

॥ एतो अमल कप्प उद्यानमां, देवाची नारी ॥ एतो
रूपकला गुण नारी हो ॥ एतो धारी रे सम नाली रे,
आवी वंदे वीरने जी ॥ १ ॥ देइ प्रदक्षिणा स्वामीने
॥ दे० ॥ एतो निज निज नाम सुणावी हो ॥ एतो
नावे रे वधावे रे प्रभुने नाचे रंगशुं जी ॥ २ ॥ बम
बम बमके वींबीया ॥दे०॥ एतो घम घम घूघरा वागे
हो ॥ एतो रागें रे प्रभु आंगें रे संगे स्वर आलापती जी
॥३॥ जणणण वीण वजावती ॥दे०॥ एतो घणणण
घुमणी लेती हो ॥ एतो देती रे कर ताली रे, ताली
गाती गीतनेजी ॥४॥ दौं दौं धप मप बंदशुं ॥दे०॥ एतो
वागे मृदंग सुछंगी हो ॥ ए तो रंगी रे गुण संगी
ंगी वागे वांसली जी ॥५॥ थेइ थेइ थेइ मुख उच्चरे ॥

दे०॥ एतो विच विच अंगने वाली हो ॥ ए तो बाली रे सुकुमाली रे, नाली मुखडुं वीरनुं जी ॥ ६ ॥ लली लली देती उवारणां ॥ दे० ॥ एतो समकित निर्मल करती हो॥एतो धरती रे गुण धरती रे, जिहां प्रनुजी विचरता जी ॥७॥ एणी परें नाची नमी करी॥दे०॥ एतो अनुनव सुख मतवाली हो॥ एतो गाली रे निज नव टाली रे डुःखडुं पहोती स्वर्गमां जी ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे ॥ दे० ॥ एतो समकितवंतनी करणी हो ॥ एतो वरणी जिननक्ति नीसरणी हो॥ शिव मंदिर तणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ ए५ ॥

॥ अथ गहूंली बन्नुंमी ॥

॥ ते तरिया नाइ ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आज नगरमां महिमा उब्बव, नलें अम्ह गुरु आव्या रे ॥ संघ सहुने मनमां नाव्या, आणंद हरखें वधाव्या रे ॥ आज० ॥ १ ॥ पंच समिति त्रण गुप्तियें गुप्ता, बकाय जीवने पाले रे ॥ पंच माहाव्रत सूधां धारे, पंचाचारशुं माले रे ॥ आज० ॥२॥ आगम गुरुनो सांनली हर्षित, वंदन बहु जन आवे रे ॥ नर नारीतो मलि मलि टोलें, गुरुगुण गहूंली गावे आज० ॥ ३ ॥ शुनपरिणति वर पट्ट बिगाइ, आ

थाल लइ हाथे रे ॥ शुभरति कुंकुम निजगुण तांडुल, समकित श्रीफल साथें रे ॥ आज० ॥४॥ जिनवाणी बहुरंगी उढणी, उढी मनने भावें रे ॥ ज्ञानादिक गुण लूठणां रूडां, भावशुं शालि वधावे रे ॥ आज० ॥५॥ द्रव्य ने भावें गुरुने वंदी, सांभलो वीर प्रभु वाणी रे ॥ तप जप नियम व्रत बहु कीजें, मलुक भावना आ णी रे ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति ॥ ए६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्ताणुंमी ॥

॥ अंबसाल उद्यानमां, कांइ विचरंता वीर जिणंद रे ॥ समवसरण देवें रच्युं, कांइ बेठा नयनानंद ॥ जिन जीने बोलडीये ॥ मोह्या मोह्या रे सुर नर लोक ॥ जि० ॥ १ ॥ पर्षदा बार तिहां मली, कांइ बेठी नमी शुभ चित्त रे ॥ कोडी गमे सेवा करे, कांइ नि र्जर नेपुर हुंत ॥ जि० ॥२॥ चउमुख चउदिशि वीर जी, कांइ देवे देशना सार रे॥ दान शीयल तप भाव ना, कांइ शिवपुर मारग चार ॥ जि० ॥ ३ ॥ चार निकायना देवता, कांइ अण हूंते एक कोडी रे ॥ से वा करे प्रभुजी तणी, कांइ उभा बे कर जोडी ॥ जि० ४ ॥ वनपालकें जइ वीनव्यो, कांइ श्रीकोणिक हाराय रे ॥ सपरिवारशुं आवियो, कांइ बेगो नमि

प्रज्जु पाय ॥ जि० ॥ ५ ॥ समतारसमयी देशना, कांइ जांखे वीर कृपाल रे ॥ नयगर्जित सुणी बोलडा, कांइ हरख्यो चित्त नृपाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिथ्यामत दूरें टल्यो, कांइ जग्यो समकित सूर रे ॥ मोहमहामद मोडियो, कांइ प्रगट्यो आतम नूर ॥ जि० ॥ ॥ ७ ॥ कोणिक घरणी धारणी, कांइ जरी अक्षत शुचि थाल रे ॥ जिन आगल स्वस्तिक करे, कांइ कुंकुम रंग रसाल ॥ जि० ॥ ८ ॥ मलीने सौ गावे तिहां, कांइ प्रज्जुगुण जक्ति सलोक रे ॥ ज्ञान सुजस विनोदमां, कांइ मग्न हुआं बहु लोक ॥ जि० ॥ ए ॥ ए७ ॥

॥ अथ गहूंली अठाणुंमी ॥

॥ कवमारां हो नणदि वाजां वाजीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पंच महाव्रत हो पालता, पालता जीव ठ काय ॥ मोरी आठी बहेनी, चतुर चोमासुं गुरुजी आविया ॥ ए आंकणी ॥ संघ सहुने हो मन जावता, जावता प्रवचन माय ॥ मोरी० ॥ च० ॥ १ ॥ गाम गाम हो जवि बोधता, रोधता विषय प्रमाद ॥ मो० ॥ पुण्य प्रजावें हो गुरु इहां, मलिया धर्मना वाद ॥ मोरी० ॥ च० ॥ २ ॥ शोल शणगार सजी सुंदरी, गावेजी गीत रसाल ॥ मोरी०

गहूंली रचे मन रंगशुं, सुणीयेंजी सूत्र विशाल ॥मोरी०॥च०॥३॥ धवल मंगल गावे गोरडी, वाजंते ढोल निशान ॥मोरी०॥ ललि ललि कीजें जी लूहणां, धरंताजी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ४ ॥ नगर लोक सहु हरखियां, वाध्योजी धर्मनो रंग ॥ मोरी०॥ वीरशासन मांहे एहवा, मलूक नाव अनंग ॥मो०॥५

॥ अथ चक्केसरी मातानी गरबी नवाणुंमी ॥

॥ अलबेली रे चक्केसरी मात, जोवाने जइयें॥ जेह नां सोवन वर्णां गात्र, जोवाने जइयें ॥ ए आंकणी ॥ जोवा जइयें पावन थइयें, देखी मन गहगहीयें रे ॥ एक तीरथ बीजी जगदंबा, वंदी संपत लहीयें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ आठ भुजाली अति लटकाली, मृगपति वाहन वाली रें ॥ जिनगुण गाती लेती ताली, तीरथनी रखवाली ॥ जो० ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥श्री सिद्धाचल गिरि पर गाजे, देवी देव समाजे रे॥ रंगित जाली गोंख बिराजे, घडी घडी घडीयालां वाजे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी लाल गुलाल सोहावे, पीला राता चरणा रे ॥ बहु शोभे छे जग जननीने, केशर कुंकुम वरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥४॥ लके कर कंकणने चूडी, नवसरो हैयडे हार रे ॥

रत्नजडित जांजर छे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो०
॥ अ० ॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल वाने, बाजुबंध
बेहु बाहें रे ॥ केडें कटि मेखला रणजणती, ऊलके
हीरा मांहे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देश देशना म्हा
ना महोटा, संघ लइ संघवी आवे रे ॥ ते सहु पहेलां
श्रीफल चूनडी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ अ०
॥ ७ ॥ धन्य धन्य ए श्रीपुंमरगिरि जिहां, जगदंबा
नो वास रे ॥ जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे
आश ॥ जो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रख
वाली, श्रीजिन सेवा कारी रे ॥ दीपविजय कहे मांग
लिक करजो, छे बहु शोना तारी ॥ जो० ॥अ०॥ए॥

॥ अथ गहूंली शोमी ॥

॥ शामलिया शामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानगुणें वस्या रे, अरिहा अजित जिणंद नग
वान ॥ आवी समोसस्या रे, नयरी साकेतन उद्या
न ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वर गणधार ॥
एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे नंमार॥१॥
क्षपक आरोहिने रे, मुनि गुणगाणे वधता जाय ॥
वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाती करम खपाय
केइ परिपाटीयें रे, डुक्कर तप अनिग्रह करनार

इम बहु घातीयें रे, प्रभुने संघे छे परिवार ॥ २ ॥ सहु देवें मली रे, कीधुं समवसरण मंमाण ॥ बेठा मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिभुवन भाण ॥ जइ आ रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रभुनी ताम ॥ षटखंम सा मीयें रे, पूरित मनोवंछित काम ॥ ३ ॥ बहु आमं बरें रे, आवे चक्रिसगर उत्साह ॥ भक्ति पुरस्सरें रे, वांदे प्रभुजीना पाय ॥ प्रभु दीये देशना रे, भवियण ने प्रेम प्रकाश ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो भवियण भव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीयें परवरी रे, नामें रत्न सुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे मंगल आठ उदार ॥ त्रण खमासणें रे, वांदे वधावें थइ उजमाल ॥ रंगभरथी सुणे रे, प्रभुनां अमृत व यण रसाल ॥ ५ ॥ इति ॥ १०० ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने एकमी ॥

॥ द्वारिका नयरी सुंदरु ॥ तारुजी ॥ सहसावन अ भिराम हो ॥ गुणवंतीगहूंली करे फागमां ॥ वारुजी ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसख्या ॥ ता० ॥ वन पालक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अग्रमही षी अछ्युं ॥ ता० ॥ वंदन पडह वजाय हो ॥ गु० ॥ २ ॥ पंच अभिगम साचवी ॥ ता० ॥ वांदें

तिहां गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगल गहूंली करे ॥ ता० ॥ देखी प्रभु मुख अरविंद हो ॥ गु० ॥ ॥ ३ ॥ श्रद्धारत्न चोक उपरें ॥ ता० ॥ नक्ति कुंकुम रंग रोल हो ॥ गु० ॥ पंच प्रमादनी तर्जना ॥ ता० ॥ पंच रत्न ठवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञान गुलाल उडावतां ॥ ता० ॥ तप अबीर न रि नरि मूठि हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी नरी ॥ ता० ॥ चारित्र परिमल उत्कंठी हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ नावना वसंत गायें तिहां ॥ ता० ॥ गिरुआ नेम नी पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये ॥ ता० ॥ जेथी जाये नवनी काश हो ॥ गु० ॥ ॥ ६ ॥ गहूंली एणी परें कीजीयें ॥ ता० ॥ पामें मु क्ति विलास हो ॥ गु० ॥ पंमित ज्ञान शिवपद लहे ॥ ता० ॥ विनयें सफल होये आश हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने बेमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥

॥ चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्यो रो ॥ वीर पटोधर धीर, सोहम आय रह्योरी ॥ १ ॥ जीय कोद जीय मान, माया लोन दह्योरी ॥ संपूरण श्रुतज्ञा जिनवर बिरुद वह्योरी ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रम

निद्रा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षटविध जय
णा जजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे बार, जावना तप
पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि शशी मेरु समारी
॥ ४ ॥ कंचन कमल विचाल, बेसी धर्म कहेरी ॥
जेहथी जवियण लोय, आतम तत्त्व लहेरी ॥ ५ ॥
कोणिक नृपति नारि, घोयली गेली करेरी ॥ माणक
मोति वधाय, पुण्य जंमार जरेरी ॥ ६ ॥ जिनशास
ननी जक्ति, करतां पाप हरेरी, सोहव सरिखे साद,
घोयली गीत जणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥ १०२ ॥
॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रणमी ॥ आबे लालनी देशी ॥
॥ ज्ञानादिक गुणखाण, राजगृही उद्यान ॥ गणधर
लाल ॥ सोहम सामी समोसस्या जी ॥ १ ॥ कंचन
गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प
सरे सदा जी ॥ २ ॥ अंग उपांगह बार, दशविध
रुचिनो धार ॥ ग० ॥ दुगविध शिक्षा उपदिसे जी
॥ ३ ॥ तेर क्रिया व्रत बार, गिहि पडिमा अगीया
र ॥ ग० ॥ श्रावक गुण जेद सिक्षना जी ॥ ४ ॥
विनय वैय्यावञ्च कल्प, धरे दशविध छ अकल्प
॥ ग० ॥ वंदन दोष विकथा तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम
॥ कचोल, गहूंली करे रंगरोल ॥ग०॥ अक्षत श्री

फल उपरें जी ॥ ६ ॥ मगधाधिपनी नारी, शोल स जी शणगार ॥ ग० ॥ ललि ललि करती लूबणां जी ॥ ७ ॥ जोती गुरुमुख चंद, पामती परमानंद ॥ग०॥ चतुर चकोरडी गोरडी जी ॥ ८ ॥ सुरवधू नरवधू कोडि, मलि मलि सरखी जोडि ॥ ग० ॥ गावे जिन शासन धणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ १०३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने चारमी ॥

॥ पंचम पदने गाइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रुतनाणी श्रुतधर गुरु रे, पंचाश्रवना त्यागी रे ॥ दशत्रिक वेत्ता नाव समेता, संवर तप सोनागी ॥ धन गुरु वंदो रे ॥ वंदो रे जगत हितकार ॥धन०॥ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवानिगम ए सूत्रजमांहे, जीवाजीव विचार रे ॥ इग ङु ति चउ पण उविहा, जूजूआ नेद उदार ॥ धन० ॥ २ ॥ शशी रवि ग्रह नक्त्र तारा, जंबु लवणें बमणा रें ॥ धाइय त्रिगुणा नणजो सघले, चउदिशि फरे परिनमणा ॥ धन० ॥ ॥ ३ ॥ इण परें देशना दिये गुरु नाणी, पुण्य पाप उलखाणी रे ॥ श्रद्धा नासन तत्त्वरमणथी, थायें अनुनव नाणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ श्रद्धावंत सुश्राविक रे, निसुणी श्रीजिनवाणी रे ॥ सन्मुख जोती अ

पूरती, मुक्तिपदनी निशानी ॥ धन० ॥ ५ ॥ चिहुं ग ति दुःखडां चूरती रे, ठवती पंच रतन्न रे ॥ प्रजुगुण गाती पाप पखालती, प्रणमी शुणती धन्य ॥धन०॥ ॥ ६ ॥ मुक्ताफल वर थाल वधावी, लेती समकित रंग रे ॥ जगगुरुनो विनय साचवती खेमें, धरती ध्यान तरंग ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ १०४ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो नें पांचमी ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाला ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन वनमां रे आवे, तिहां श्रीवीरजिणंद सु हावे ॥ समवसरण तिहां सुर विरचावे, चोशठ इंद नमे अर्चावे ॥ महा० ॥ १ ॥ शम दम शांत गुणें ते जरिया, जाणे जंगम नाणना दरीया ॥ चौद सहस मुनिशुं परवरिया, राजगृही नयरी संचरीया ॥महा० ॥२॥ राजा श्रेणिक वंदन आवे, चेलणा राणी साथें सुहावे ॥ बारे पर्षदा वंदे जावें, देशना सुणी मन रंज न थावे ॥ महा० ॥ ३ ॥ गुरुमुख आगल गहूंली कीजें, नरजव पामी लाहो लीजें ॥ कुंकुम घोली मो तीडे वधावे, जावें समकित शुद्ध थावे ॥ महा० ॥ ४ ॥ श्री चंद्रोदय रत्न सूरिंद, निर्मल उग्यो पूनम ॥ जाणे जंगम मोहन वेली, टोलें मलि मंगल

गाय साहेली ॥ महा० ॥ ५ ॥ गहूंली गाइ रंग रसा ली, गुणिजन हृदय कमलमां वाली ॥ श्रीविजयराज सूरीश्वर राया, जे प्रणमे ते शिव सुख पाया॥म०॥६॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने छही ॥

॥ चालो साहेली, जंगम तीरथ वंदन करवा जइयें, हां रे मुनि मुख निरखी, आपण सरवे साथें पावन थइयें ॥चा०॥ पंच महाव्रत तो जे नित्य पाले, समिति सम दृष्टि समजाले ॥ षटकायजीव निल्य प्रतिपाले, पंचेंद्रिय विषयने टाले ॥चालो०॥ १ ॥ नवविध ब्रह्म गुप्ति जे धारे, चार कषाय चोरने वारे ॥ वली त्रण दंभने मनशुं वारे, त्रण गुप्तिशुं आतम तारे॥ चा० ॥ २ ॥ थावर निरय तिरि गति नावे, देव मनुष्य पदवि पावे ॥ एम शुद्ध संयम मन नावे, ते मुनिवर मुक्ति जावे ॥चा०॥३॥ राग द्वेषने जेणे परहरिया, मुनि गुण समतारसना द रिया ॥ एम गुण सत्तावीशें नरिया, ते मुनिवर शिवर मणी वरिया ॥ चा० ॥ ४ ॥ गणधर आगल गहूंली कीजें, कुंकुम अक्षत थाल नरीजें ॥ सुणी वाणी ध लडां रीजे; नरनव पामी लाहो लीजें ॥ चा० ॥ ५ द्वादश अंग गुणें नरिया, जिन मारग आराधे वि या॥जेणें ताख्या छे आपणा परिया, संवेग सुध

संचरिया ॥ चा० ॥ ६ ॥ विजयराज सूरीश्वगछराया, पट्टोधर चंद्रोदय गाया ॥ जिनवाणी सुधारस पाया, नवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा०॥७॥१०६॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने सातमी ॥ थारा महेला उपर ॥ मेह जरूखे वीजली॥ हो लाल॥ ऊ० ॥ ए देशी ॥

॥ शोल करी शणगार, सोहागण नामिनी हो लाल ॥ सोहागण नामिनी ॥ उंढी नवरंग घाट, चाले गज गामिनी हो लाल॥ .च० ॥ शीलवती कर थाल, ग्रही कुंकुम नरी हो लाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण मांहे, हैये उलट धरी हो लाल ॥ हैये० ॥ १ ॥ सिंहासन मणि पीठ, विराजत जगधणी हो लाल ॥ विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणि, वखाणे अति घणी हो लाल ॥ वखा०॥ षट घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो हो लाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिजुवन दीवडो हो लाल ॥ त्रिजु० ॥ २ ॥ कुमति मत अंधकार, हरे ज्युं दिनमणि हो लाल ॥ हरे० ॥ पार्षद हर्षित ˙ लहे जिम सुरमणि हो लाल ॥ लहे० ॥ सुणी प्रजुनी वाणी, करे गुण गहूंअली हो लाल ॥ करे० ॥ ˙ाढो चोखा मान, सोपारी ऊजली हो लाल ॥ सो ॥ ३ ॥ वधावे मुनिराय के, दिलमांहे हरखती

हो लाल के ॥ दिल० ॥ गुरु मुख पूनमचंद के, नय
णे निरखती हो लाल के ॥ नय० ॥ पामी स्त्री अव
तार, गणे ए सारता हो लाल ॥ गणे० ॥ खारा स
मुद्र मांहे, ए मीठी वारता हो लाल ॥ ए मीठी० ॥ ४ ॥
गोरी गावे गीत, गुरु गुण रस चढी हो लाल ॥
गुरु० ॥ राग द्वेष दोय चोर, संघातें अति वढी हो
लाल ॥ संघातें० ॥ करे प्रशंसा देव के, धन धन ए
वशा हो लाल के ॥ धन० ॥ मनुज पणानो लाहो, ली
ये छे शुभदशा हो लाल के ॥ लीये छे० ॥ ५ ॥ पधारे
देवछंदें, तीर्थंकर मलपता हो लाल ॥ तीर्थं० ॥
आवी बेसे पदठाण, श्रीगौतम दीपता हो लाल ॥
श्री गौ० ॥ सूत्र तणी जलधार, वरसावे वेगशुं हो
लाल ॥ वरसावे० ॥ विबुध दर्शन वृन्द, वधारे नेगशुं
हो लाल ॥ वधारे० ॥ ६ ॥ इति ॥ १०७ ॥

॥ अथ पर्यूषणस्तुति एकशो आठमी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यें पामी, श्रावक करे ए करणी
जी ॥ आठे दिन आचार पलावे, खंमण पीसण ध
रणी जी ॥ सूक्ष्म बादर जीव न विणासे, दया ते॰
नमां जाणे जी ॥ वीरजिनेसर नित पूजीने, स्
समकित आणे जी ॥ १ ॥ व्रत पाले ने धरे ते शु

पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर चंदनें जिन सवि पूजे, नवनय बंधन खोले जी ॥ नाटक करीने वाजित्र वजाडे, नर नारीने टोलें जी ॥ गुण गावे जिनवरना इण विध, तेह्ने कोइ न तोले जी ॥ २ ॥ अठम नत्त करी लइ पोसह, बेसी पौषध साले जी ॥ राग द्वेष मद मत्सर ढांकी, कूड कपट मन टाले जी ॥ कल्पसूत्रनी पूजा करीने, निशिदिन धर्मे माले जी ॥ एह्वी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदिक टाले जी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणुं करियें शुद्ध नावें, दान संवत्सरी दीजें जी ॥ समकेतधारी जे जिन शासन, रात्रि दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेला पडिलानीने, मनोवांछित मह्होत्सव कीजें जी ॥ चित्त चोखे पजूसण करशो, मन मान्यां फल लेशो जी ॥४॥१०७

॥ अथ गहूंली एकशो ने नवमी ॥

॥ वीरजीने वचने अमृत रस फरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ नक्ति करीजें रे नवि श्रुतधर तणी रे, जेह्नी सानरे जिणदेव ॥ संदेह पूछीजें नित मेव ॥ नक्ति० ॥ तुंगीया नामें रे नगरी अति नली रे, जिह्नांक बारे व्रतधार ॥ जेह्नां मोकलां घर तणां ॥ नक्ति० ॥ २ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत

रचना रे, जिनमतरंजित जेहनी मींज ॥ वाव्युं स
मकित सुरतरु बीज ॥ नक्ति० ॥ ३ ॥ तेणहिज
नयरें रे थिविर समोसख्या रे, पाश संतानीया श्रुत
नंमार ॥ साथें पांचशें छे अणगार ॥ नक्ति० ॥ ४ ॥
पुप्फवई चैत्यें रे अवग्रह अवग्रही रे, ते सुणी श्रा
वक हर्षित थाय ॥ गुरुपद वांदवा संघ तिहां जा
य ॥ नक्ति० ॥ ५ ॥ गहूंली करे रें शुन चित्तें श्रावि
का रे, गुरु मुख निरखी हर्षित थाय ॥ वांदी बेसे
यथोचित गय ॥ नक्ति० ॥ ६ ॥ धर्म सुणीने रे श्रा
वक वीनवे रे, संयम फल तपफलथी होय ॥ पूछ्या
प्रश्न तिहां एम दोय ॥ नक्ति० ॥ ७ ॥ संयम केरुं
रे फल अनाश्रव कह्युं रे, तपफल निर्जरा ते होय ॥
एम कहे उत्तर मुनि सहु कोय ॥ नक्ति० ॥ ८ ॥
वली ते पूछे रे कहो तुमें पूज्यजी रे, तो किम देव
गति ते जाय ॥ गुरु कहे सांनलो महानुनाव ॥ न
क्ति० ॥ ए ॥ सुरपणुं होवे रे सराग संयमें रे, शेष
करमथी ते थाय ॥ इम सुणी सहु निज निज घर
जाय ॥ नक्ति० ॥ १० ॥ नगवती अंगें रे नांखे वी
जी रे, एहमां नहीं कोइ संदेह ॥ श्रीविजयचंद
सूरि मुखथी एह ॥ कहे मुनि रामविजय गुण गेह ॥ १

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥ साहेली महारी राजगृही उद्यान, प्रनुजी समोस
र्या रे लोल ॥ सा० ॥ गणधर मुनिवर सहस, चौद
शुं परिवर्या रे लोल ॥ सा० ॥ करता नवि उपकार,
दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्र
तिपाल, बिरुद संनारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ ली
धो छे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे लोल ॥ सा०
चउगइ दुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥ सा०
अणहूंते सुरकोडि, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥ सा० ॥
कर जोडी मोडी मान, आणा शिर निर्वहे रे लोल ॥
२ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे
रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुर्मुख उच्च
रे रे लोल ॥ सा० ॥ जिनमुखपूरव पाय पीठ, बिराजे
गणधरू रे लोल ॥ सा० ॥ आठ पर्षदा सुरराज, चार
तिहां नरवरू रे लोल ॥ ३ ॥ सा० ॥ कहे वनपाल नूना
थने, नाथ जी पधारिया रे लोल ॥ सा० ॥ मगधाधि
प नूपाल, सुजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ देइ
१धामणी सार के, जिनगुण गावतो रे लोल ॥ सा० ॥
चन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥
सा० ॥ हय गय रह नड चतुरंग, सैन्य नरनारशुं

रे लोल ॥ सा० ॥ शेठ सेनापति अंते, उर परिवारशुं रे लोल ॥ सा० ॥ धुरथी त्रण प्रदक्षिणा, वंदे सुख करू रे लोल ॥ सा० ॥ पामी यथोचित ठाम, बेसे तिहां भूधरु रे लोल ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुक्तिक स्वस्तिक राखी, चेलणा पूरती रे लोल ॥ सा० ॥ विच विच जिनमुख देखती, दुःखडां चूरती रे लोल ॥ सा० ॥ धाराधर जिम वीर, वाणी प्रकाशतां रे लोल ॥ सा० ॥ तप जप संयम करी, सुख पामी शाश्वतां रे लोल ॥६॥सा०॥ सर्व विरति देश विरति, जिनमुख उच्चरे लोल ॥ ॥ सा० ॥ रयणी भोजन केइ, ब्रह्मचर्य मन धरे रे लोल ॥सा०॥ भंभा सारादियादि, पुर भणी आवीया रे लोल ॥ सा० ॥ विजयलक्ष्मी सूरिंद के, गुरुगुण गाइया रे लोल ॥ ७ ॥ ११० ॥

॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराज मुंबइमां पधास्या ते वखत बनावेली गहूंली एकशोने अग्यारमी॥

॥ सजनी मोरी, पासजिणंदने पूजो रे ॥ स० ॥ दुनियामां देव न दुजो रे ॥ स० ॥ सुहित गुरु अहिं आव्या रे ॥स०॥ सहु संघतणे मन भाव्या रे ॥१॥ ॥स०॥ मोहनलालजी माहाराज रे ॥स०॥ सुण सहु अधिकार रे ॥स०॥ पंच महाव्रत सूधां पा

॥ स० ॥ शास्त्र तणे अनुसारें रे ॥ २ ॥ स० ॥ स
मता गुणना दरीया रे ॥ स० ॥ क्रिया पात्रना भरी
या रे ॥ स० ॥ ज्ञान तणा भंमार रे ॥ स० ॥ क
हेतां न आवे पार रे ॥ ३ ॥ स० ॥ मधुरी वाणी
यें भांखे रे ॥ स० ॥ संघ स्वाद सर्वे चाखे रे ॥स०
प्रश्न व्याकरण वंचाय रे ॥ स० ॥ आश्रव संवर अ
र्थ थाय रे ॥ ४ ॥ स० ॥ उपर चरित्र वंचाय रे ॥
॥ स० ॥ पृथ्वीचंद कुमार रे ॥ स० ॥ सुणतां वैरा
ग्यवंत थाय रे ॥ स० ॥ अज्ञान मिथ्याय हगावे रे
॥ ५ ॥ स० ॥ षट चेला तमें जाणो रे ॥ स० ॥
विनय गुणनी खाणो रे ॥ स० ॥ जोबन वयमां छे
सरखा रे ॥ स० ॥ वंदो पूजो ने हरखो रे ॥ ६ ॥
॥ स० ॥ जंगम तीरथ कहीयें रे ॥ स० ॥ वंदीने पा
वन थइयें रे ॥ स० ॥ संघना पुण्यें अहीं आव्या रे
॥ स० ॥ जैनधर्मने दीपाव्या रे ॥ ७ ॥ स० ॥ भाव
सहित भक्ति करजो रे ॥ स० ॥ पुण्यनी पोठी तमें
भरजो रे ॥ स० ॥ भरतबाहु पेरें तरशो रे ॥ स० ॥
समुद्रपार उतरशो रे ॥ ८ ॥ स० ॥ व्रत पच्चरकाण
गां थाय रे ॥ स० ॥ सात क्षेत्रें धन खरचाय रे
१० ॥ देहरे देहरे उछव मंमाय रे ॥ स० ॥ चोथो

आरो वरताय रे ॥ ए ॥ स० ॥ सधवा स्त्री गहूंली कहाडे रे ॥ स० ॥ मुक्ताफलशुं वधावे रे ॥ स० ॥ नागर पानासुत गावे रे ॥ स० ॥ मगन लागे मुनि पाये रे ॥ स० ॥ पास जिनंदने पूजो रे ॥स०॥ दुनियामां देव न दूजो रे ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनलालजी माहाराजनी

॥ गहूंली एकशो बारमी ॥

॥ हो मुनिवरजी, तुज अति मीठी वाण। मुज मनमां वसी ॥ ए आंकणी ॥ तमें नविक जनोने बोधो छो, मुक्ति तणो मारग शोधो छो, वलि काम कषायने रोधो छो ॥ हो मुनि० ॥ १ ॥ तमें नवसागरथी तरिया छो, अगणित गुणोथी नरिया छो, वली ज्ञानतरंगना दरिया छो ॥ हो मुनि० ॥ २ ॥ तुम दरिसनथी दूरित जावे, सवि जन वलि सुख संपति पावे, नर नारी मलीने गुण गावे ॥ हो मुनि० ॥ ३ ॥ तुम मुख कमलाकर शोजे छे, नविजन नमराने थोने छे, मन मुक्तिरमामां लोने छे ॥ हो मुनि० ॥ ४ ॥ एवा मोहनलालजी मुनिराया, तजी चित्तथकी जेणें माया, हिरालाल कहे में गुण गाया ॥ हो मुनि० ॥

॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराजनी
॥ गहूंली एकशोने तेरमी ॥

॥मुनिवर संयममां रमता, शिवपुर जावानो खप करता, अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ मुनिवर विचरंता आव्या, षट चेला साथें लाव्या, मुंबईना संघने मन नाव्या ॥ मुनिवर० ॥ शि० ॥ अहो० ॥ १ ॥ मुनिवर संयममां शूरा, मुनिवर किरियामां पूरा, परिणामें मुनि अति रूडा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारी, नविजन नें लागे प्यारी, प्रतिबोध पाम्यां नर नारी ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिवरें लान घणा लीधा, श्रीसंघनां कारज अति सीधां, उपकार एवा माहा मुनियें कीधा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ मुनि जीनुं नाम घणुं सारूं, मोहनलालजी लागे प्यारूं ॥ जिनशासन घणुं अजवाल्युं ॥ मु० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ जे मुनिवरना गुण गावे, शिवपुर नगरी वेगें पावे, मगन कहे मुनिवरने ध्यावे ॥ मु० ॥ शि० ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इति ॥ ११३ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री खांतिविजयजी माहाराज
॥ नी गहूंली एकशोने चौदमी ॥
॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥

॥ खांतिविजय मुनि वंदियें, जेथी जवतरुकंद निकंदी यें जीहो, खांतिविजय मुनि वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ जेनी अमृत धारा सारिखी, गुणखाणी वाणी वखाणीयें जी हो ॥ खांति० ॥१॥ नित्य छठ अठम तपस्या करे, जेनुं सद्याय ध्यानमां ध्यान छे जीहो ॥ खांति० ॥ २ ॥ जेनां ज्ञान तणो महिमा घणो, मानुं केवली हुं कलिकालमां जी हो ॥ खांति० ॥ ३ ॥ जेणें ममता तजी संसारनी, एक मुक्तितणी ममता करी जी हो ॥खांति०॥ ४ ॥ हिरालाल कहे मुनि ते नमो,जेथी पाप जशे सवि दूरथी जी हो ॥खांति०॥५

॥ अथ माहामुनिराज श्रीआत्मारामजी माहाराजनी
॥ गहूंली एकशो ने पंदरमी ॥

॥ सांजलजो रे मुनि संयमरागी, उपशम श्रेणें चडिया रे ॥ ए देशी ॥ जलुं थयुं रे मारे सुगुरु पधार्या, जिन आगमना दरिया रे ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान तरंगें लेहेरो लेता, ज्ञान पवनथी जरिया रे ॥ जलुं ॥ १ ॥ आज कालमां जे जिन आगम, दृष्टि

मां आवे रे ॥ गहन गहन एहना जे अर्थो, प्रगट क
रीनें बतावे रे ॥ ज०॥ २ ॥ शक्ति नहिं पण जक्ति
तणे वश, गुण गावा उल्लसावुं रे ॥ कर्णामृत गुरु
चरित्र सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज०
॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबुद्वीपमांहि, एही जरत म
झार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जिहां, लेहेरां गाम
मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ क्षत्रियवंश गणेशचंद घर,
जन्म लिया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां,
मुक्ता फल उपमानें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां प
ण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतिथी म
ली ढूंढक जनने, ढूंढकपंथ धराया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥
संवत ओगणीशें दशमांही, उज्ज्वल कार्त्तिक मा
सें रे ॥ पंचमीने दिवसें लिइ दीक्षा, जीवनराम गु
रु पासें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान जण्या वली देश फि
र्या बहु, जूनां शास्त्र विलोकी रे ॥ संशय पडिया गुरु
नें पूछे, प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर
न मिल्या जब गुरुजीनें, ज्ञानकला घट जागी रे ॥ सुम
ने सखी घट आय वसी जब, ढूंढपंथ दिया त्या
रे ॥ ज० ॥ ए ॥ धर्म शिरोमणि देश मनोहर,
र जूमि रसाली रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरुपा

सें, मन शंका सहु टाली रे ॥ न० ॥ १० ॥ परम कस्यो उपकार तुमें बहु, श्रीगुरु आतमराया रे ॥ जयवंता वरतो आ जरतें, दिन दिन तेज सवाया रे ॥ न० ॥ ११ ॥ दुःसम काल समे गुरुजी तुमें, वचन दीवडा दीधा रे ॥ शांतिविजय कहे जेथी हमारा, विषम काम पण सीधां रे ॥ न० ॥ १२ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री अचलगछपति पूज्य नट्टारक श्रीरत्नसागर सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने शोलमी ॥

॥ सहि मोरी घृतकल्लोल प्रनु प्रणमीने, पामी सुगुरु पसाय हो ॥ सूधी श्राविका ॥ स० ॥ अचलगछपति गायशुं, विवेकसागर सूरिराय हो ॥ सू० ॥ १ ॥ ॥स०॥ पंचमहाव्रत पालता, दशविध यतिधर्मसार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ संयम सत्तर प्रकारना, नवविध ब्रह्मचर्य धार हो ॥ सू० ॥ २ ॥ स० ॥ ज्ञान दर्शन गुणें पूरिया, क्रोधादिक परिहार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ पांच समितियें समिता रहे, चार अनिग्रहना धार हो ॥ सू० ॥ ३ ॥ स० ॥ पिंमविशुद्धिने शोधता, इंडि निरोध करनार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ त्रण गुप्तियें गा रहे, जावना जावता बार हो ॥ सू० ॥ ४ ॥

पंचाचारने पालता, टालता कर्मनो चार हो ॥ सू०
॥स०॥ छठ अठमादिक तप करे, वारे विषय विकार
हो॥ सू० ॥ ५ ॥ स०॥ गंगाजलसम निर्जला, गुण
छत्रीशना धार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ रत्नसागर सू
रि पटधरु, लब्धितणा नंमार हो ॥ सू०॥ ६ ॥स०
विचरंता गुरु आविया, सुथरी शहेर मझार हो ॥
॥ सू० ॥ स० ॥ सुरगुरुसम वाणी सुणी, हरख्यां
सवि नर नार हो ॥ सू० ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीश
शें पिस्तालीशें, माहाशुदि त्रिज रविवार हो ॥ सू० ॥
॥ स० ॥ नाग्यवंत दीक्षा लिये, संघ चउविध मनो
हार हो ॥ सू० ॥ ८ ॥ स० ॥ दीक्षामहोत्सव हर्ष
करी, पामी हर्ष उल्लास हो ॥ सू० ॥ स० ॥ वास
क्षेप सूरियें कस्यो, देवा मुक्तिनो वास हो ॥ सू० ॥
॥ ९ ॥ स० ॥ उत्सव रंग वधामणां, हूवे जय जय
कार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ चिहुं गति पूरण साथि
यो, करे सोहागण नारि हो ॥सू० ॥ १० ॥ स० ॥
रुगुण गहूंली गावतां, पातक दूर पलाय हो ॥सू०
स० ॥ पाटण रहेवासी शामजी, सूरितणा गुण
हो ॥ सू० ॥ ११ ॥ इति ॥ ११६ ॥

॥ अथ अचलगछपति पूज्य भट्टारक श्री विवेक
॥ सागर सुरिनी गहूंली एकशो ने सत्तरमी ॥
॥ रंगरसिया रंगरस बन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ ए देशी ॥
॥ श्री सरसति पद प्रणमियें ॥ गुरु सुखकारी ॥ गा
यशुं गछपति राय ॥ मनडुं मोह्युं रे गुरु सुखकारी ॥
॥ए आंकणी ॥ शासनदेवी पसायथी ॥ गु० ॥ सेव
तां सवि सुख थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ १ ॥ अचलगछ
पति जाणियें ॥ गु० ॥ श्रीरत्नसागर सूरिराय ॥म०॥
॥ गु० ॥ तास पटोधर दीपता ॥ गु० ॥ श्रीविवे
कसागर सूरि राय ॥ म० ॥ गु० ॥ २ ॥ कछदेश
सोहामणो ॥ गु० ॥ लघु आसंबियो मन जाण ॥
॥ म० ॥ गु० ॥ गोत्रदेवया दीपता ॥ गु० ॥ कुलवृ
द्ध उसवंश वखाण ॥ म० ॥ गु० ॥ ३ ॥ टोकरसी सु
त शोभता ॥ गु० ॥ जननी कुंता बाइ मात ॥ म० ॥
॥ गु० ॥ वंशविभूषण जाणीयें ॥ गु० ॥ नामविवेक
सिंधु विख्यात ॥ म० ॥ गु० ॥ ४ ॥ मांडवी बंदर
मनोहरु ॥ गु० ॥ श्री संघने अतिघणो प्यार ॥म०॥
॥ गु० ॥ संघ चतुर्विध भली करी ॥ गु० ॥ करे प
ट महोत्सव सार ॥ म० ॥ गु० ॥ ५ ॥ संवत ओ
णीश अगवीशें ॥ गु० ॥ कार्त्तिक वदि पंचम

॥ म० ॥ गु० ॥ आचारज पद पामिया ॥ गु० ॥ तिहां शोने शुन शनि वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ६ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ गु० ॥ शिष्य शोने सवि सार ॥ म० ॥ गु० ॥ जाचकजन संतोषिया ॥गु०॥ जस वध्यो मन प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ ७ ॥ मुक्ता फल सूवी नरी ॥ गु० ॥ रचे गहूंली परम उदार ॥ ॥ म० ॥ गु० ॥ ॥ गुणवंत गावे प्रेमशुं ॥ गु० ॥ गुरु वंदे वारं वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ८ ॥ अचलगछ पति दीपता ॥ गु० ॥ श्री विवेकसागर सूरिराय ॥ ॥ म० ॥ गु० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ गु० ॥ श्रीसंघने कल्याण थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ ए ॥११७॥

॥ अथ अचलगछपति पूज्यनट्टारक श्रीविवेकसागर सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने अढारमी ॥

॥ आ आप उठी उतावली ॥ सहि मोरी रे ॥ में सांनली मीठी वाण ॥ लागे मुने प्यारीरे ॥ आ आचारज गुरु आविया ॥ स० ॥ आ जकुपुर बंदर मझार, वात स नूरी रे ॥ १ ॥ आ चरण करण व्रत धारता ॥ स० ॥ ॥ श्रावक दीये बहुमान,पुण्य पनोतां रे ॥ आ समि गुप्ति सूधी धरे ॥स०॥ आ पाले प्रवचन माय,पा ंकुरी रे ॥ २ ॥ आ दश अर्द्धने दिये देशवटो

॥ स० ॥ आ पांचशुं राखे प्रेम, वहे जेम धोरी रे ॥ आ अष्टमदने गालवा ॥ स० ॥ आ नवशुं राखे नेह, गुरु ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥ आ चार सदा चित्तमां वसे ॥ स० ॥ आ बारशुं जीडे बाथ,आतम अजुवाली रे ॥ एवा गुरुने वांदशुं ॥ स० ॥ आ शोल सजी शणगार, सहियर टोली रे ॥४॥ आ रजत रकेबी कर धरी ॥ स० ॥ आ मांहे लावो डीपना पुत्र, कनक कचोरी रे ॥ आ चोकें चाचर चहूवटे ॥ स० ॥ आ थोका थोकें चालो, गाउ गुण गोरी रे ॥ ५ ॥ आ वखाणने अवसरें साथीयो ॥ स० ॥ आ पूरे गुणवंती नार ॥ पुण्य सनूरी रे ॥ आ केसर वहू काढे गहूंअली ॥ स० ॥ आ धनबाइ पूरे चोक, चेत चतुरी रे ॥ ६ ॥ आ अमृत सरिखी दिये देशना ॥ स० ॥ आ सांजले श्रुत गुणबाण, वाणी मधुरी रे ॥ आ अचल गछपति शोलता ॥ स० ॥ आ विवेकसागर सुरींद, पदवी रूडी रे ॥ ७ ॥ इति ॥११८॥

॥ गहूंली एकशो उगणीशमी ॥

॥ प्रणमुं पदपंकज पास रे, जस नामें लीलविलास रे गाउं गुरुजी मनने उह्लास ॥ सूरीश्वर विनति अ धारो रे ॥ जुजनगरी चोमासुं पधारो ॥ स

॥ १ ॥ शेठ लाभणशा कुलें आया रे, माता ज्ञु
माबाइना जाया रे, तेथी गुरुजीशुं अधिकेरी माया
॥ सू० ॥ ज्ञु० ॥ सू०॥ २ ॥ करतां एणे देश विहा
र रे, होशे पुण्यजी लाभ उदार रे, मिथ्यात्वी होशे
व्रतधार ॥ सू० ॥ ज्ञु० ॥ सू० ॥ ३ ॥ भुजनगरमांहे
अधिकारी रे, शेठ शिवजीशा समकेतधारी रे, ते तो
वाट जुवे छे तमारी ॥ सू० ॥ ज्ञु० ॥ सू० ॥ ४ ॥
शेठ लाभण ने काटीया उसवाल रे,वोरा चुखड ने वमो
डा उदार रे, भुजनगर देवाणी मेवाल ॥सू०॥ ॥ ज्ञु०
॥ सू० ॥ ५ ॥ रुचिवंती सुश्राविका आवे रे, श्रद्धा स
मकित स्वस्ति बनावे रे, गुरु सन्मुख मोतीयें वधावे
॥ सू० ॥ ज्ञु० ॥ सू० ॥ ६ ॥ हर्ष ऋद्धिने सुख सवा
ई रे, अचल गछमां नित्य नित्य थाइ रे, सान्निध्यका
री छे माहाकाली ॥ सू० ॥ ज्ञु० ॥ सू० ॥ ७ ॥
गुरु चारे चोमासां आया रे, लब्धियें गौतम ऋद्धि
पाया रे, मुक्तिसागर सूरि सवाया ॥ सूरीश्वर विन
ति अवधारो रे ॥ ज्ञु० ॥ सू० ॥ ८ ॥ ११९ ॥

॥ गहूंली एकशो ने वीशमी ॥

संगमतीर्थे विचरंता, करता देश विहार ॥ भवि
जीव प्रतिबूझवा, करता जग उपकार ॥ १ ॥

ते मुनिवर तारे तरे ॥ ए आंकणी ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे; पाले प्रवचन माय ॥ अनय दान मुनिवर दिये, पाले जीव छकाय ॥ ते० ॥ २ ॥ पंच माहाव्रत धारता, पंचाश्रव पच्चरकाण ॥ अष्ट मदने मुनि गालता, पाले पंचाचार ॥ ते० ॥ ३ ॥ द्वादश पडिमाने शोधता, करता आतमशोध ॥ तप जप करे मुनि आकरां, काढे कर्मनुं मूड ॥ ते० ॥ ४ ॥ सम वाणी करे गोचरी, पाले दोष विशेष ॥ उंच नीचकुल जोवतां, नहिं लोजनो लेश ॥ ॥ ते०॥ ५ ॥ केशी गणधर पधारिया, सावछिनयरी उद्यान ॥ राय परदेशी माहा पापीयो, धरे साधुनो द्वेष ॥ ते०॥ ६ ॥ प्रश्न पूछे मुनिवर प्रत्यें, जीव अजीव विचार ॥ स्वर्ग नरक जाणुं नही, न गणुं पुण्य ने पाप ॥ ते० ॥ ७ ॥ नय उपनय प्रश्न पूरिया, प्रतिबूझयो नूपाल ॥ एक अवतारी ते थयो, पाम्यो मुक्ति माहाराज ॥ते०॥ ८॥

॥ गहूंली एकशो ने एकवीशमी ॥

॥ आज सखि गुरु वंदन करीयें, वंदन करीयें तो नवजल तरियें हो साम,आज सखि गुरुवंदन करीयें॥ ए आंकणी ॥ गछपति गणधरना गुण गाउं, हरख धमनमांहे हो साम ॥ आज० ॥ १ ॥ सूरि शि

णि गुण रागी, कनक रमणीना त्यागी हो सा० ॥आ०॥ पंच समिति त्रण गुप्ति बिराजे, प्रवचनमायने पाले हो सा० ॥ आ० ॥ २ ॥ चरण करण सित्तेरी संजारे, ज्ञान कल्लोल उगाले हो सा०॥ आ०॥ छत्रीश छत्रीशी गुण राजे, षट दर्शनमां गुरु गाजे हो सा०॥आ० ॥ ॥ ३ ॥ वरसे छन्नु गुणें गुणवंता, सोहम जंबु महं ता हो सा०॥आ०॥ देश काल महिलें विचरंता, समकित बीजना दाता हो ·सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ राजगृही नगरीयें पधास्या, श्रेणिक सामइयुं लाव्या हो ॥सा० ॥ आ० ॥ मंत्री अजय कुमार प्रधान, यथोचित गु णना जाण हो सा० ॥ आ०॥ ५ ॥ चेलणा प्रमुख सहु परिवार, गुरुने वांदे बहु मान हो सा० ॥आ० आतम बाजोठ पीठ बनावी, गहूंली करे रढियाली हो सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली स्वस्तिक पूरे, श्रेणिकनी पटराणी हो सा० ॥ आ० ॥ ललि ललि गुरु मुख लूछणां करती, शिवनिश्रेणीयें चडती हो सा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ गुरुमुख कमल नयणें रे जो ी, वचन सुधारस पीती हो सा० ॥ आ० ॥ देशना नली हरख जराणी, देव जणे मधुरी वाणी हो ॥ ॥ ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥१२१॥

॥ अथ श्री कोठारानी गहूंली एकशो ने बावीशमी ॥
॥ जीरे मारे प्रणमुं जिनवर पाय, मूकी मननो आं
मलो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे शोलमा श्रीजिनराय,
शांतिनाथ जी करुणा करो ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी० ॥
पामी तास पसाय, गछपति गुरु स्तवना करुं ॥ जी०
॥ जी० ॥ जंगम तीरथनाथ, तीर्थ वंदावो कृपा करी
॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ वृद्ध उसवंश उत्पन्न, गुरुकुल
वासे दिनमणि ॥ जी० ॥ जी० ॥ रत्न त्रयना निधान,
माता कुंता बाइयें जनमिया ॥ जी० ॥ ३ ॥ जी० ॥ ग्रह
गणमां ज्योतिचक्र, अविचल राज्यें ध्रुव रहे ॥ जी० ॥
जी० ॥ मुनि परिवारमां तेम, गुण छत्रीशे शोजता ॥
जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ वारे परनो ठाठ, निज आतम
गुण अनुसरे ॥ जी० ॥ जी० ॥ कोठारा नगर मकार,
श्रावक लोक सुखिया वसे ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी० ॥ गुरुच
रणे लयलीन, रागी सोजागी करे वीनति ॥ जी० ॥ जी० ॥
नर नारीनां वृंद, बहु आमंबरें लाविया ॥ जी० ॥ ६ ॥
जी० ॥ नव शत सजी शणगार, श्राविका लावे गहूं
अली ॥ जी० ॥ जी० ॥ आतम बाजोठ पीठ, '
भ्रिनी पूरे साथियो ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ समकि
श्री फल हाथ, लली लली लीये लूंठणां ॥ जी'

॥ जी० ॥ घूंघट खोल्या घाट, विच विच गुरुमुख जोवती ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ देशना अमृतधार, सांजली श्रोता रस लीये ॥ जी० ॥ जी० ॥ नय गम जंगनी जाल, स्यादवाद रचना करे ॥ जी० ॥ ए ॥ जी० ॥ विधि पक्षगछ शिरताज, रत्नसागर सूरीश्वरु ॥ जी० ॥ जी० ॥ तस पाटें पूरींद, विवेक सागर तेजें तपे ॥ जी० ॥ १० ॥ इति ॥ १२२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रेवीशमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामें सो हम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद कषा य, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरि णति जजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान, करे गुणदेशना ॥ उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सुणवा जि नवर वाणि, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक के, हर्ष मने बहु ॥ २ ॥ वसन आजूषण व्रत, त णा अंगें धरे ॥ कोणिकनृपति नार, हवे गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरने, साथें आवती ॥ आतम अ व्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकुम घोली, नक करे जावथी ॥ आतम पीठने उपर, जिनगुण

गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, एम गहूंली करे ॥ अनुभवनां करि लूंछणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ द्रव्यभावथी इणि परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंत ते श्राविका, भवसायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजनें, गुणसखि मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ १२३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो चोवीशमी ॥

॥ चालो सखि जइयें जातरा रे लोल, जिहां छे मरु देवीनो नंद, शुभभावथी रे ॥ चालो जइयें जिन वांदवा रे लोल ॥ १ ॥ चालतां चरण पावन थयां रे लोल, आतम हर्ष भराय ॥ शुभ० ॥ चा० ॥ बारवशीमां पेसतां रे लोल, नयणां पावन थाय ॥ शु० ॥ चा० ॥ २ ॥ दश शत चैत्य सोहामणां रे लोल, वच्चें अष्टापद उत्तंग ॥ शु० ॥चा०॥ त्रैलोक्य दीपक देहरां रे लोल, चोमुख प्रतिमा चार ॥शु०॥चा०॥३॥ पूर्व द्वारें पेसतां रे लोल, निस्सही कही त्रण वार ॥ शु० ॥चा०॥ पांच अभिगमन साचवी रे लोल, प्रदक्षिणा त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥ मूलनायक रुषभनाथजी रे लोल, अजितनाथ शिवसाथ ॥शु०॥चा०॥ चारे दुवारें बिंबथापना रे लो अष्टादश दोय चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ५ ॥ जिनप्र

जिनसारखी रे लोल, ऋषनजी पूर्वे प्रसिद्ध ॥शु०॥चा०॥ अष्टापद गिरि सिद्ध थया रे लोल, नलिन पुरें कर्यो वि श्राम ॥ शु० ॥चा०॥ ६ ॥ शेठ नरसी सुत हीरजी रे लोल, कुंअर अंग सुजात ॥शु०॥चा०॥ तस नार्या शुक्कपक्किणी रे लोल, उत्तम कुलें उत्पन्न ॥ शु० ॥ चा० ॥ ७ ॥ दान शीयल तपस्या गुणें रे लोल, पूरबाई जग विख्यात ॥शु०॥चा०॥ सुगुरु संजोग उपदेशथी रे लोल, चैत्य क र्यां चोसार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ८ ॥ समकितदृढ गुण आत्मा रे लोल, ज्ञान नक्ति निमित्त ॥ शु० ॥ सफल नयो दिन आजनो रे लोल, देवयात्रा फल सिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥ ए ॥ कल्पवृक्ष फल्यो पुण्य अंकूरथी रे लोल, मुक्ति वर्या सुख नरपूर ॥ शु० ॥ चा० ॥ १० ॥

इति श्रीगहूंली संग्रहाख्य पुस्तकस्य
प्रथमनागः समाप्तः ॥